#### Hitesranjan Sanyal Memorial Collection Centre for Studies in Social Sciences, Calcutta

Record No.	CSS 2000/123	Place of Publication:	Calcutta
		Year:	1230b.s. (1823)
		Language	Bangla
Collection:	Indranath Majumder	Publisher:	Samacharchndrika press
Author/ Editor:	Bhabanicharan Bandyopadhyay	Size:	13x19cms.
		Condition:	Brittle
Title:	Kalikata Kamalalaya	Remarks:	Fiction – satire

### अथ निर्धिः

विषय क्रिनिकाजाक्यदानयज्ञिका -द्धिकाठा कमनानयः किंविर भवान्य भूथम छङ्गाञ्च अरे अर्।नगरत्रत ब्लाख खाउ इरेवात वाम नाश कान विपिनात जि खागात উপক্ষ----बिद्धाभात्र दिशक्तम (माय বিবেচনার উল্লেখ विपित्राम्य अञ्चामाः नगत्वाभित्र (मार्याह्मः । विष्णित्र शुकुउखद्ग णाठात जुडे वियशक विषिणित भ

	भव भार	रियय । शब भरिष्
	नगत्रगान्त के बत	जायाकथा यावांनल जाया
	विषशिक्ताकत धाता ३०	ख माधुजाया त्रविवत्रव २८
	वधायकण्याकष्ठवाद्याः - ३७ ३६	नगत्रवामित्र डिंडरा
	शायान जागायाम्हा	याङ्ख वाङ्खाः व
•	(क्त्य शारा)	यन जायात्र निवत्रन
	ा।यदाजिभाम	जिन्दाक खालनाव म
*	कथान अम्मावन्त्र नाहि विद	भारमा भारत करत्यः अकट
	अट निर्माणात्र अभ	वियास विकिथात हा । हा
	न ध्वानित छेज्य ३२,	मनावनानिव छेउव ••• - । ४२ ५०
	व्यादाश्यनामि ज्यादा	- बनाम निव्यस्य विस् निव
	सकि विदिन निवासी न न न न न न न न न न न न न न न न न न न	Sec. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2.
	नगर्याभित्र छित्र । । । २२	मगद्भ भित्र अवासमा
	जन्दनांक साद्याचेत	<b>33</b>
	भाषाय णमाजा नियं क्रिया	अम मनशकि वियास
	िंडि, ब्रियार्ग	विद्याला
	व्याप कर्णप्राप्तिमिनात	नगर्वाभित जिल्ह्य । दिन
		वाज्ञान महाराजिय

BLOCKED INFORMATION.

নগুর বানির উত্তর  করণ বিষয়ে বিদেশির পুশ্  করণ বিষয়ে বিদেশির পুশ  করণ বিষয়ে বিদেশির পুশ  করণ বিষয়ে বিদেশির পুশ  কলকাতায় এবং ইতস্ত  বাস্থালি বালক দিগের পূতি  সাহেব লোকের দিগের  বিদ্যা বিষয়ে বিদেশির  পুশ  করণের কারণ জিজ্ঞাসা  করণের কারণ জিজ্ঞাসা  কলকাতায় ভাগ্যবান্  কলিকাতায় ভাগ্যবান্  কলকাতায় ভাগ্যবান্  কলিকাতায় ভাগ্যবান্  কলকাতায় ভাগ্যবান্  কলকাতায় কলেমিন  কলিকাতায় কলিকাতায় কলিকাতায় কলিকাতায় ভাগ্যবান্  কলিকাতায় ভাগ্যবান্  কলকাতায় কলিকাতায় কলিকাতায় কলিকাতায় ভাগ্যবান্  কলিকাতায় কল	বিষয় পত্ৰ	পতিত	বিষয় পত্ৰ পত্তিক
দলাদনিতে প্রধাপক দিগেরলাভ ক্ষতি, এভদিবয়ে বিদেশিরপুশু  কর্ম বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্মর বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় এবং ইতস্ত ভাগামে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পুশু  কর্ম বাসির উত্তর  কলিকাতায় ভাগামেন্ ভাগামির বিদেশির পুশু  কলিকাতায় ভাগামেন্ কলিকাতায় ভাগামেন্ কলিকাতায় ভাগামেন্ কলিকাতায় ভাগামেন্ কলিকাতায় ভাগামেন্ কলিকাতায় ভাগামেন্ কলিকাতায় বিদ্যামির বিদ্যামির ভাগামির ভাগামির বিদ্যামির বিদ্যাম		78	शेखरकत मिर्म क्ष्म मन् म
দিশেরলাভ ক্ষতি, এভদ্বিয়ে বিদেশিরপূন্ তির  বিদেশিরপূন্ তির  কলিকাতায় এবং ইতর্ত্ত  ভোগানে পাঠশালা বিষয়ে বিদেশির পূন্ তির  কারণ কর্জে হিয়াথাকেন, এতিইবয়ক বিদেশির পূন্ তি  নগর বাসির উত্তর  তিগ্রালির বালক হিগের পুতি  সাহেব লোকের হিগের  বিদ্যা বিষয়ে বিদেশির  পূন্ তি  নগর বাসির উত্তর  ত  করণের কারণ জিজ্ঞানা  পূন্ তি  নগর বাসির উত্তর  ত  কলিকাতায় ভাগ্যবান  করণের কারণ জিজ্ঞানা  কলিকাতায় ভাগ্যবান্  কলিকাতায় কনিবােশিরপূন্			कद्रगिव्याद्य विषिवित्र शुन्न १३ ३०
বিদেশিরপুন্ন  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  তোগুনে পাঠশালা বিষয়ে  বিদেশির পুন্ন কারণ কর্জ দিয়াথাকেন,  একিইবয়ক বিদেশির পুন্ন ত কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতায় এবং ইতস্ত  তোগুনে পাঠশালা বিষয়ে  বিদেশির পুন্ন কার বাসির উত্তর  ত কলিকাতায় এবং ইতস্ত  কলিকাতল  কলিকাল  কলিকাতল  কলিকাল  কলিকা			नगत्न वानित्र छेखत १२
নির্বার বিনির উত্তর - ৬ ২ বিদেশির পুশ্ - ৭৮ ১৭ কলপতিরা আগনদল পুষ্টের কারণ কর্জ দিয়াথাকেন, ক্রিট্রেয়ক বিদেশির পুশ - ৬২ ১৮ নগর বাসির উত্তর - ৬০ ৮ করণের কারণ জিজ্ঞানা - ৮০ ১৭ করণের কারণ জিজ্ঞানা - ৮০ ১৭ কলকাতায় ভাগ্যবান্ \ ক্রেডার কর করিয়া কেন ভাজাইয়া রাখেন গড়ং বিষয়ে বিদেশির পুশ্ - ৬০ ১৮			
দলপতিরা আগনদল পৃথির কারণ কর্জ দিয়াথাকেন, এক দ্বিয়ক বিদেশির পূশ ৩২ ১৮ নগর বাসির উত্তর ৩০ বিদ্যা বিষয়ে বিদেশির পূশ ৩০ নগর বাসির উত্তর ৩০ নগর বাসির উত্তর ৩০ নগর বাসির উত্তর ৩০ করণের কারণ জিজ্ঞান ৮০ নগর বাসির উত্তর ৩০ ক্রোকর করিয়া কেন নাজাইয়া রাথেন গতং বিষয়ে বিদেশির পূশ্ ৩০ বিষয়ে বিসেশির পূশ্ ৩০ বিষয়ে বিদেশির পূশ ৩০ বিষয়ে বিদ্যালয় বিদ্যা		32	ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে
কারণ কর্জ দিয়াপাকেন,  কারণ কর্জ দিয়াপাকেন,  কারণানির উত্তর  তি নগর বাসির উত্তর  ক্রান্তর বিষয়ে বিদেশির  পুশ্  নগর বাসির উত্তর  ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর  ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর  ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর  ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর  ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর  ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর  ক্রান্তর			
ক্রচন্নিয়ক বিদেশির পুশু ৬২ ১৮ নগর বাসির উত্তর ৬০ নগর বাসির উত্তর ৬০ নগর বাসির উত্তর ৬০ ক্রেডাব কয় করিয়া কেন নালাইয়া রাখেন গ্রন্থ			
বিদ্যা বিষয়ে বিদেশির  পূশ - ৩০ ১০  নগর বাসির উত্তর - ৬৬ নগর বাসির উত্তর - ৮১  কে তাব কয় করিয়া কেন  নালাইয়া রাখেন গতং  বিষয়ে বিদেশির পূশ্র - ৬৬  নগর বাসির উত্তর - ৮১  কলিকাতাহ ভাগ্যবান \ লোকেরদিগেরকিহেতু পাঠ  শালায় সনোযোগ নাই  গ্রান্থ বাসির উত্তর - ৮১  ১৪		36	
পুশ্ব - ৩০ করণের কারণ জিজ্ঞাসা দিও ১৭ নগর বাসির উত্তর - ৬৬ নগর বাসির উত্তর দেও কেতাব কয় করিয়া কেন নাজাইয়া রাখেন গতং বিষয়ে বিদেশির পুশ্ব - ৬৬ ১৪ বিষয়ে বাসির উত্তর - ৮১ ১৪	नगङ्गरानित्र छेखद्र ७७		
নগর বাসির উত্তর  কেতাব কয় করিয়া কেন  কাজাইয়া রাখেন গতং  বিষয়ে বিদেশির পুশ্ত  গতি বিষয়ে বিদেশির পুশ্			
কেতাৰ কয় করিয়া কেন  নাজাইয়া রাখেন এতং  বিষয়ে বিদেশির পুশুত ১৯  ১৪  এত দ্বিষয়েবিদেশিরপুশ ১০ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪		>0	
নালাইয়া রাখেন এতং বিষয়ে বিদেশির পুশ্ত তিও  তালা বালির উত্তর ৩৯ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪ ১৪			
বিষয়ে বিদেশির পুশ্ত ৬৭  লালায় দনোযোগ নাই  লালায় দনোযোগ নাই  তালায় বালির উত্তর ৩১ ১৪  তালায় বালির উত্তর ৬১ ১৪  তালায় বালির উত্তর ৬১ ১৪			
वानित्र प्रस्ति — अञ्च १८ ।	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		
1	Shape .		
नगत्र-पाणित्र ७७%	ाग्याज्य ५७३ — - ४२		मगत्र-वाभित्र छेछत्र ५२

BLOCKED INFORMATION.

शिक्त विषय शुख्रकत्र मित्र क्श्रम् मन् यक विष्मित्र भून .... 78 कर्वन विषय विषिनित्र श्रम .... 43 नश्त गामित्र छेखन नगन्न वाजित्र छेखत ......१२ म्नाम्बाउ ज्यानक मिश्यत्रमाज क्रिज, এड द्विरा किन्वाजाय ववः इज्ङ ভোগামে পাঠশালা বিষয়ে विष्मित्रशृभ् .... ६त अशाब यानित छेड्य .... - ७) विषित्र श्रुण ----महीमछिता जाभनम्स भूष्टित नगत्र वामित्र छेख्य ..... १२ काइन कर्डा रियाथाकन, वाकानि वानक मिश्नव शुि अकि दियशक विषित्र भूष .. ७२ जार्व (ला कित्र मिरगंत्र न्ध्र दानित्र छेख्य--विष्ठा विषय अञ्चायाग विष्णा विषय दिए नित्र করণের কারণ জিজ্ঞাসা नगत दाभित उँ उत नगत्रं वामित्र উखत किवकार्गा जागावान् কেতাব কয় করিয়া কেন ्लारंकद्रिशिद्यक्रिक्कु भौते नाजाहेशा द्वारथन अउ भाषाय मतायाग नारे বিষয়ে বিদেশিক পুশত • এত দ্বিষয়ে বিদেশির পুশ 38 भगद्र-वाभित्र छेड्द्र----

		12/
বিষয় পত্ৰ	शिं क	विषय - अब शिका-
কলিকাতা বাসি কয়েক জন		जागायान वाजित निक्रे वात्नक
ব্যতিরেকে আর কাহারো	0	লোক যাভায়াভবিষয়ের উত্তর
र्विष्ण विष्य भ्रायाण नार्		শ্বণে বিদেশির অধিক
ইংার কারণ কি, এতদ্বিয়ে		अत्मर्
विषित्रिक्षकिद्धामा ৮२	78-	नगत वामित्र छेख्त ः । । ।
नगत वामित्रं छेखत ৮৩	•	
विम्या विषय नगत वीनित		जगावान् क्षिक कन्या
উত্তর শুবণে বিদেশির		ভগিনীর বিবাহের ভার গুস্ত
भाग्यह		ষ্যক্তি দিগেগনিয়ত যাতায়াত-
नगत वानित छेखें व ৮०		कद्रान अंजिष्यस्य विषित्रः
भी ज वाम असि विषय विषय	26	الله الله الله الله الله الله الله الله
		नगद्र वामित्र छे उद्य ५५ ं ७३
निवास भूदा ।	16	चातूत्र (भोगार्च मिशोत
नगत वानित छेडत ৮8	<b>3</b>	किं शकारत मिन भिद्यार
जागावान वाजित्र निकृष्टे	•	
তানেক জোক্যাভায়াভ	· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	'ञ्झ' এত দ্বিয়ে विष
वियास विकिश्च श्रा	<b>79</b>	भित्र श्रम
नगत वामित छेउत्र ৮०	9	्रा नगत वात्रित छेखत ५२

বিষয় পত্ত পতিত গাবুর নিকটে পণ্ডিতেরা লাব্রের তাৎপর্য্য শুনেন একদ্বিয়ে বিদেশির পুশু নগর বাসির উত্তর भिन्न एतिः ॥

क्षिक्रां जाक्राला

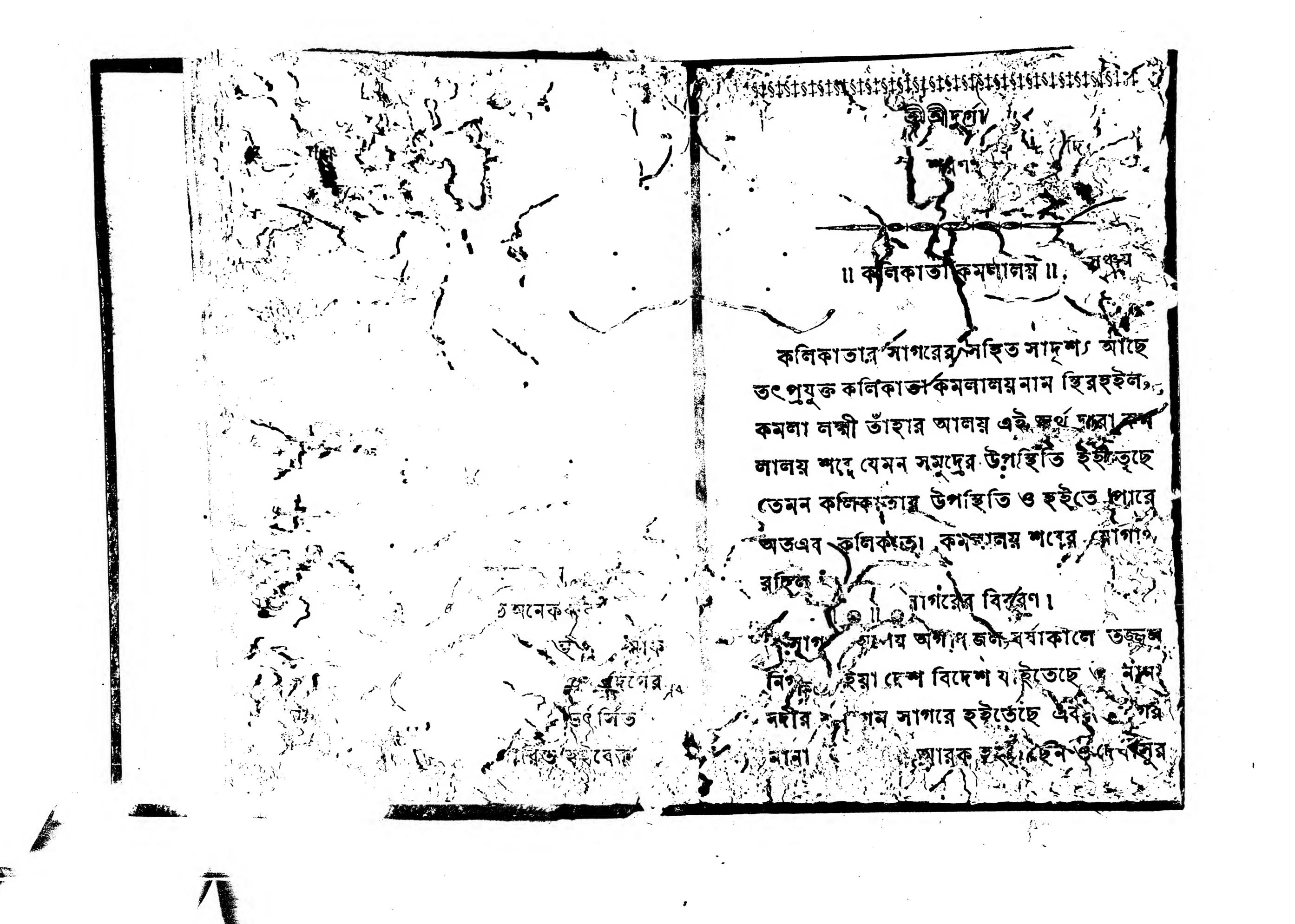
भिष्णाम निर्वाभी ७ व्यन अन्य नगत्रवाभी - लांक नकन এই कनिकाजाय चानिया (थ्यान् क्रोमलामि अंतुभड इरेडि जामू यम्मर्थ श्यान उड्भूगुक भकायुक्कश्या वडमगत्वामि. जना निकार श्रमण अयजवानगां य विद्यापाद्यनका प्रग्यं यन शब्भायं कृष्णाशकथन कंत्रिन उर्काल शिक्षां में

INSECTDAMAGE

काह ही जिन्छ, नर, रिन्यू द्वादा निया न्याय जन नाबिष्ठ विकेता विकर्तन रहेशा के वर्गान मृश्चिक भारत जीज अप । भेरे किलाजा मरा नगड़ित स्निव्छ । अधिवद्गा क्षिया । क्षिया । एक विम्नान्य नागंक गुज्कत्व भुव इं इंगान ्यान्य अन्यारिया भारत प्रमास्य प्रथानकास वीवश्व अवीजि अवाक्त्राङ्गी हैजानि आभू हा उर्देश्वमा शियम, अधिक दूक्त निका जाक भना ् व्यक्ति वृद्धा उक्ष यानक तज्ञा अहर छ भागितक इंगाज अक मल्लाइ आह् त्य धान म्मा गृथंबान कुड़ो व अनिम्मक्षा, मर्गह्णा अ क्येनाना र्हेड तङ्गाडित वराया क तिवस्त निशिष्ठ चीशग् जादशात्रा व्यत्वक पुरुष्ट्रिक िल्लां ८ वड्म इंग्रह्ण वाभाउ जानक के बां जागारे ्त्क जाङ्गां वृति। निर्द्धाः वेडन् स् गुरुद्धांक ंद्रम किन्नु भूचे जिस्कितिसाछि (य निर क्षार्ट किरोर्ग रिकाजाक्त अविध्वाद्या जाङ्गत् । जल्निं खः

क्रवाकिन्छ। क्रिक्निया मनाम छ सरेशा गरकः। मिरणत मर्बमा ग्राप्ट अ वाकरको पत्र मिर्द्रमा त्रभूमान कतिरवन।

वहे गुष्ट हातिहत्तक इहेरविक वामाहिन् किन्।
यि गुंड मर्या वर्ग हम श्र व्यामाहिरमाय थारक
उर्व नाधुनहास्त्र प्राची सम्यूचन श्र कामाहिरमाय थारक
गुह्म नाकतिया जार्र भर्या गुंडमक्तिरण व्यामाति
मुननार्थका इहेरविक गुंड मर्या विरम्भित श्र श्र श्र नगत्तवामित छेख्यमाता नानाविक विवास छाए
श्र नगत्त्र मर्द्यक विरम्भित मर्द्यक वि, नग्र व नगत्र मर्द्यक के मर्द्य छम्माह्म विरम्भित श्र में छ नगत्र मर्द्यक के मर्द्य छम्माह्म विरम्भित श्र में छ नगत्र प्राची छात्र विरम्भित श्र में छन्।



সংগাদে সাথে ছেন কইয়াছিল ভাষাতে নালালে তি কিউউ ইয়াছিল এবং সাগর শারাদি জলজ্জু বাস্করিতেছে ভগ বান্নানায়ণ সাগর বাগা হইয়াছেন ও তথায় লক্ষ্মী প্রসাগ করিতে ন সাগরে সর্বা তর্জ

किनकाञात दिवत्र

अविश्वित है स्वाह तृह कर्यकाल गून्।
अविश्वित है स्वाह तृह कर्यकाल गून्।
अव दिशं क है सा नाना दिशंद माना ग्राम है के कि विश्व विद्या अविद्या कि विद्या कि वि

তালিভেছে ও ন্থৰণ, ভয়ানক ক্ষোর পানক তালিভেছে লালা সার্দ্ধা বিশ্ব ক্ষারভেছেন তালালভিছিল ভারাদ্ধা ভালালভিছিল করিয়া আসিয়াদ্ধন ক্ষান্ত প্রকাতি ক্ষান্ত ধননভভাদি ভালে হইছেছে এবং প্রক্রিয়াল ভালভালেরো বাছল। ইইরাছে ইত্যার্থ ভাত্তবি উভযের ধর্ম ক্রেড স্নান সংজ্ঞা হইল ইভি।

কলিকাতা কমলালয় পথম তরক

কোন নিদ্ধে এই নহানগর কলিকা তাষ শাসিয়া এত্রপরে কোন বিজ্ঞান জিকে এত্র গরের ব্রাপ্ত জাত ছইবার বার্গনায়। পুল করিবেলে । পুয় আনি ক্লিকাতার রাতি কিছি শান তাবদিব্য ব্রাপ্ত অবপ্ত নিশ্বিক ন্যানকল পুলকরি ক্লাপ্রক্রীদ্ধি নার জানার জনেতা অথাই রুপ্তা जाश्वर नहामाश्व छ धना जार कहा हितका है।

এ তার্পার্যানস্তর্গ নগমন্ত্রা মহাশয় উত্তর করি
কৈছে ন, যে শুন ও ইঙ্ভোন্তকে কলিকাতার
কিছিল কিছিল

ন্ত উদ্পূথনত এইবে পলিপান নিবাসি লোকের। এই কলিডায় আসিয়া কোন একসো পারি সংপ্র করিয়া কাহার সাটীতে কিয়া বাসপুত বাস করেনপরে নারাপুকার লোকের পার্লিড আলাপ কৌশল করিবার বিশিন্ত পায় শব্র গমনাগর্ভন করেন ইহাতে কেলি সংন ইংরাজী কোনসানে পার্নী কোন স্থান হিলিছ বিশ্ব পরিশ্ব ও যত্ত্ব সূর্ক্তিগারেন লোকের দিশের উপাস্তান করিয়া বিলাব - बिएरा निका करत्रन भव भेषानकात जारात्र वाबकात वाका विषद्ध निश्च कुठेश एगाय करे निकिं बाना । इरशि ज्ञाने दकान ३-दिशदक्व निक्र नित्र खत्र या कृष्णिक प्रात्र किया। रकान विषय कर्या श्वां हुन्यं। किथिक विषय - इंड्राम्हे प्रशानकात लाएवत वाका वेद्राचीत्र ब्रीजि প্ততির উপর দেখেলাস করিয়া হেয় खान कर्त्रन, पिछी सन्वयानकान्न (व कर्य सीकाब्र नाकरतन शिक्षगाम निवासिक कारा अकुछा अस् असीकात्र, कार्तसा शास्कन यत्न क्रिन त्यः जायात्र अथात्न खाजि कृष्य कहना है, जागि निम् जना क्तिल बाह्य कि एक कि कि कि कि कि ज्ञान असम् क्यां पुरेन्त होका विजन निर्देश कर (महाभा जाराबी वाकान (वाकान वाक्ष काब हैं अने वन भिना चार्षिण अद्भिता

न इहाराज जीज्ञाग त्रवाशि व्यानक रिलाक्त वर्ष निकारित्राथर रिजए का त्र गर्जा राजा , ज्यान्यक्षित्र क्षित्र क्षित्र विष्या । इत्या । इत्य जागायामे लाक्त या निज्य कात्र वा मुरुतित क्रियानियाँक इहेशाथों कन वाष्ट्रिय (कङ् वङ्ग्रम मिन्द्राज्ञक खवा क्या क्रिए। अ जीकात कतिराति जिल्काण जिल्का मण्या पात्रा जाहारक मालाय किन्ना थाकन हेहारज क्ला भत्राक भाग स्ट्रांच महात्व मिला नान्। श्कात रतानी उ छे शाह निक्षा विवाह छेश श्रीताक धनाधिकाती धाकित्व उर्भाष्ट्र भक्ष न्भात्र ছात्रथात कित्रिया जाशनिहे अनीम इत्यान श्राम्यः यमि व्यक्षिक व्यक्षिक व्यक्षित्रः विष्ठः विष्रः विष्ठः विष्र

ैत्शज्कक्राल गमनकात्रन जोक्राजियानी त्रा वाचीय लाक किंड्यामां क्रिय एए वामिन अ स्थान निव खंव श्विवात निरुद्धा वन् जिल्लान भूत जागावान इन्साएम किन् जियाकनाश क्यानना इन्हेंने कात्र कि उद्योग उड़त किरिया थाकिन य श्वानाति किर्णेन गिर्मि আছে পৈতৃক, স্থানে কমানুরিতেহ্য় সার সেখা (न किमिनाति शृंज्जि जानेक विषय णाष्ट्र (मरे क्षिमात्रित छेशयत इंडेएउई जाव प्रमा निर्दार र्हेशाथाक अहे ब्रीजिक्स, शिजामर्ठिक् वर् कान कर्याक्र तिया युग्ग उर्हेशाष्ट्र जारा जान

व्याम्। बिस्साबं (भुयं मार्थे यम्बना व्याप्त यामक्तिश्रक्षकरमक्ष्म विवास ब्रीजिक्ड रूरेव जा शास्त्र जामात्र जान (साम्बर्धना किन ना यिष विशाह अर्थानकात हो छिछ ना श्रेरिक भाव छव कि अभिन्दामन्दाष्ट्रे जात्र इहेर्दिक (यर्हरूक वहा रनत तीजित यानजिक्किंग भूगुक लिक्किंज वर् मुःचिত ও অপনানিত হ্ইয়া স্থানে পুষ্।ন

वि, উ, यहान्य (धनकल कथाकि लिन हैहा यथार्थ इङ्ख्लाल किषु जादर स्वाकिति कि धिजाम्म बजाव थमज नर्ह, जारतः दिन नगत् 🗽 वानि लाक्त म्या यार्दा अक्ष माय्य उर्हे शाहिन वृथि जाहात्र हिर्जाश्रामधार्यम् ग्राम । व्याप्त भाषा भाषा । व्याप्त भाषा । व्याप्त भाषा । व्याप्त भाषा । ः नाक्तियाक्तिय किया जाश्रात्र है जाक्ष ्रात्रात्र कर्ग क्राविष्ठ ना सुरेशाः िय जार्शिक्टल व्यवमारे जेग्रह स्थाकाथ इनक्शिश्व शिक्टना भूबंक किलाखन, (सारका प

वाज्यव जिन्हे दिनामात्र मिला बीजिक्क दिला । व्यथा, मर्बमाहि भरीकार बजावा धेवजाय खगा । षाजी जारि खगानमधान य जाताम् हिं वर्षा छ।। , वर्णाए जारहो जकत्विति संजान विरिव्ह । वान। अन विविद्या क्रियंक ना (याइ व मक्षा खनाक जिक्रम कित्रिया व जाय मसका निज रहे याष्ट्रि गाउँ वव निविद्यम गामिनि ए जकन श्राद्री वाहिक (मायकहिलान जाई। उ (कवन नगत्वा नि लाक्त्रिम्गित्र पाछा जो भूकाम इरेडिहि, थानत खान खान जातित च जान जान्य अ जनाङ, मईकिविधालाकि उत्रभाषन मधामाः । , वार्थाए देउँन ज्ञासन नधान वह जिविध शुकाष्ठ (लाक नर्बर्ड आहि महा मय जन्मान क्रिया (प्रथान क्षेत्र जङ्ग निथ्र कड शुकाब शाहितन ज्ञात, अनक्ति बाना (ए जी श नाना लाक तात्र कि विक्रिक्त जाराज भाषिक ने वास्य स्थिति निष्टेणां अञ्जिविक विविध्यकात्रे (नाक व्याप्ट वाशनि जारा भ्यमा छा ज था किर्यन वाड भन

ष्णन्यां नगत्रां वाभी वर्ष भक्षिगु न निवाभी जावर 'जाक किमुकांत (मानी च्डेएंड भारत।

'जानचर्ती नगरा दामी किरिडिएन मून जारे विद्वहनाश्य विलाग जुभि ह्याक जान बीजि डेश र्षाने क्विवान छित्र उत्तराजि वहीं विष्ठ ति । बिद्देशि ए । बिद्दिना नाक तिया कि । म्वराहि कान वस्त्र वर्शनकिति वक्त ना व्यव्यव वियम मुका जियम भाव माइहै ल जिल्ड मुका मिन्न स्मिन्स अरे विविचनास (नाक रेजन शुज्ि कलीश मुंबर्र म्बिक्षेत्र भाषा वाकीष ्थावि साभिज करत लोह भाव वार्जितक धना शाबि शाबाभुक्कि मुन्। मि साभन कर्तना जाज এর, তুনি সুপাত্ত তোনার পুশের উত্তর দারা ज्यान्। इंग्यार्थाश्राहम् कतिव ॥ ।। ।। ।। विश्वाकि निरुष्ठ जानाम किया श्रित देवन । माबि कें, मानि आई किल्लाकात आरंनक ्रिल्याक जाणाव जरूर हेशा एन हेर्गता जिल्ला जः । काल गाड़ाजां प् कित्रश कर्या एत गानं करते । जाव ए जिन रमहे झाति है कार्न यांशन इय कर

व्याजि मुहेम अ या काविम अ (क्रांच्या अक शह्त जगरा ग्र् जाजिया भून बार्व वार्वाम कित्या শয়ন করেন নাত্র।

न, फे, आश्रिन याश्र मुनिशाष्ट्रन डाङ्ग यथार्थ वर्षे किन्नु अजाम्मी ब्रोडि हिन्सु मार्डिक श्राय नाई जान यमि काश्रात्र थारक भारति कियाँ (वन धारी इहरवक जारात विभिन चानि विणि जनर्थनिङ्किलु जम् लाक्त्रिमिश्र (य थाता उडा ज जाहि डाइ। सून।

". विषयि, जम् ला कि इ धारा

याङ्गिक शुथानर क्या व्यर्श ए ए उद्यानि वा मूह्मि गिबि कर्मा कि ब्रिशा था किन डाँ हा तो भार • शर्बन कितिया थाएकन नाना भुकात रिजल या हात युष्ट्रमुख्य , मुथानु छव इय छिनि छ। इ। हे , सम्प कितिया मानकिया मनाभनान उत्र शुकारकान पान यिनियम श्रञ्जि क्या कित्रिया (जाइन कार्त

किष्टि काल विमान कित्र आ अभूव (भाषाक क्रिया पालकी क्रिया प्राप्त किया भालकी वा अथूर्व मेंक है। (द्राहर क्या क्रिया भावकी क्या क्रिया काल वित्र कर्मात भावक कर कर क्या क्रिया गृह का गाय क्रिया गृह का गाय क्रिया गृह का गाय क्रिया गृह का गाय क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र

নধ্যবিত লোক অথাৎ যাঁহার। ধনাত্য নহেন কেবল অন্যোগে আছেন ভাঁছাদিগের পুয়ে ঐ রীতি কেবল দান বেঠকিআলাপের অল্লতা আরপিরি শুমের বাহুল্য।

मिन्सिकाथक केंद्र लाक केंद्रिका जानक

7 7 )4 )

শ্বারশ্বেরলআহার ওদানীদিক্টেরলাইব আছে
আরশুনবিষয়ে পাবলা বড় কারণ কেই মুইরি
কৈই মেট কেইবা বাজারসরকর ইত্যাদি কুর্ম
করিয়াথাকেন বিস্তর পথহাটিতেইয় পরে পায়
প্রতিদিন রাত্রে গিয়া দেওয়ানজীর নিকট থাওরা
থৈলাজ্রা নহাশয়২ করিতে হয় নাকরিলেও
নয়পোড়া উদরের জালা।

थाता किश्वाम अक्या अभाषात्र जागारवान् शाता किश्वाम अक्या अभाषात्र जागारवान् लाकित ती किश्वान्ह, जगवात्न कृषात्व याहात्र क्रिश्व शृह्त जत थन आह् मिह श्वात वृद्धि श्वार पूक्ष हो किशा ता क्रीका तित छे श्वात हो केश्वा वा क्रिया श्वाह आक्रिया क्रीका जान्त्र श्वाह जागा वा क्रिया श्वाह क्री जा न्या शाक्रिया श्वाह का ता आतं जाना वालाय था किया श्वाह का ता आतं जाता वालाय था किया श्वाह का ता आतं जाता वालाय था किया श्वाह का ता

किक्टिकाल, विमान कतिया जभूब (भाषाक ब्रायाएग हेजामि भन्नीधान कन्निया भानकी या अश्व नेक हार्वाइल कर्मशान गमन कर्वन कर्यान्याद्य काम विरवहना भूत्रक उर्शान थाकिया ग्र् णागज इया मिनक जव जा वि भाव छग्रग क्रिया इस्मानामि भुकालना क्षेत्र ग्रम्भा एक न्यान भविव इहेया नायः नक्षा वन्यनापि ज्ञाभन क्रिया बद्दा (यागानस्त्र भूनर्यात रेवठेक र्यः, भारत ज्ञानक द्वारकत नगागम रहेगा थारक (कर्कान क्यांभन्धिक (कर्वा क्वन माञ्चार क्रिवात्र निभिन्छ षाहरमन षाध्या जिनि कथन काश्त अध्छ माकार क्रिति धमन क्रायम इंडिंगिमि।

नर्श्न किवन अञ्चाराश चार्ह्न काङ्। दिश्व यहाँ जा यात्र भिन्न मार्गन वाल्ना

मित्रिष्णभाष्ठ केष्ट्र लाक काष्ट्रात्रिशिश जानक

क्षाता (कवल या श्वत क्षाना दिक्षां तल यिव या हि जातन्त्रविषय शावन। विष् कात्र (कर् मूर्ति (कर् (मर्ट (कर्वा वाजात्रमत्कत रेजामि कुर्ग, कतियाथारकन विख्य मथशां दिञ्स भाव भाष প্তিদিন বাত্তে গিয়া দেওয়ানজীর নিকট পাজ্ঞা 'रियाखा बङ्गमयर कित्रिक र्य नाकित्लिख नश्राणाष्ट्रा छेम्द्रब्र क्वाना।

वहे जकल कर्मकाबि विषयि जमुलाकिव धाता किश्वाम अकृत जमादावत जागावाम लाकित ती जिण्नर, जगवानित क्षांज यारात मिश्नित्र शृहुत्रज्व थन আছে मिहे थरनत वृद्धि 'अर्थार मुक्ष्रहाज काष्ट्रात्र वा जनीमात्रित जेशस्य क्हें ज नाग्या वाय क्हें साथ डिम् ख हस डाहा दा नथाविङ लाक व्यर्श योक्षत्रा बनाए। भाष्य वार्षन वालाय थाकिया भूखी कती जान् जारद्वं जंका वन्त्रनाित्र व्याङ्कात्त बे बीजि (कवल मान विठेकिषानारणते जाकन किविया श्रांय व्यवस्कि निमा यान जाबि

क्षु भद्राया, मर्दक्षि अक्रमन, भूतान मुवर्ग क्रिन इब वर्ग में जि। जात्र जा क्रिक वंकाञ्च ज्क्ञि॥ পश्चिमञ्जीक्ति, मकलाज्य र्बिर, बेहेवानी बिलिएडर जानुमाछ। धीतकिवा म्हान्छि, ভারত শ্বণে অতি, শ্রায়ত হইয়। করে নিতি যাতায়াত। এইরাপ শত্থ, সানেতে अम्मा इर्शिविभि विकादल जेत ॥ गम्भिः इ विभिन्न जाहान जाहामिश्व वार्यकानुमाल विमयाहिन इन्यालाठक। भाठत्वत्र एपि ज्ञ, दिनी शुंछिष्ठा पान पूर्णाएमव तथ निज्य देनिय হয়তবে উপশ্ন, কারণ পুত্তক লয়ে আছেন ছিক কর্ম করিতেছেন বিশেষতঃ পিতৃ মাতৃ थांत्रकण लिए जिंगरी वक्तान, विज्ञा भूतान म्(न, नम्(थ दिनिया जाएन शुजु क्रनेषिन।

यिश्जु भूर्स मु जिल्लाम यिक निकाजा स अधिक 'लाक कमा काख ७ मन्ना वेन्त्नाहि भन्निजान कतिशाष्ट्र वरः, याङ्ग अ शतिष्टु एत्र अ विद्व हना नाई याशाउनुथानु जब इस जाशाई कृद्धन न, छ, ञाপनि निजाउं जाउ अगज कथाछ कर्वकश्द शुरवण इङ्जि (स अ (याद्यु व अपराण কহিব কত, হইতেই পুরাণাদি পাঠ নির্ম্বর। কেবল ক্যাকাণ্ডেরি বাহুলা এবং মহামহো পাঠাপাঠ বিষেটনা, করি অই আন্টোটনা, শাধ্যায় মান্তভীটার্য্য মহাশয়রা ভাজন্মান वंदाह्क्या, यांपि भूदाराद मया, (वंदानकन जिंगु।वान् रैनाक्दा मर्बिष्ठ पर भूषिका भूष

শाका कि कत्या धनी लाक मंकन मजा जिडां जि

वज्वाक्षत निर्वाह्य अधानकारि निर्वाह्य कित्रिया कित्रया कित्रया कित्रया

वात नाम मिवल दा ता व का का विवास,
भूकि का का विशिष्ट , कि ह >, 100 0 1 / कि ब्रु
य जलाक वा के मिन का का कि हो शाकिम वा भन
वि जव वृविद्या माल वि विद्यस कि ति द्या कि विश्व विद्या कि विश्व विश्व

वि, भू, जान युक्त अध्यविकात्राक्त किन्छा । अग्रंड अथ्याजि किन इहेन (य आभनात्रिम्पूत्र सार्थित अध्यक्त ज्याभ कित्रिमा (कृत्न भात्रमी

जात्नना ७१॰ वाक् ना नाज (इस खान किया) क्षिका कर्त्रनमा जात्र मामका जित्र विषय, यथन পতা মাতার পরলোকপাণ্ডি হয়তথ্ন গণ্ডে । ক্রিয়াকেকুত্সিত কর্ম বোধ করিয়া প্তিনিধি मात्रा मार् कतिया जर्भन कितिया थाकन मिरे मग्र वक राष्ट्रिन जन यथिक कित्रिया शुरान मामापि एसाभनकित्या याहित्मन अव॰ याली एव हिङ्गार्थ किवल हुल थाइन भाज कर्तन किञ्बा क्वनमञ्क्त क्न ताथिया कृती याद्वात जनू (वारधमाष्ट्रिव क्लोब क्लान, जाव ज्ञान ज्ञान निष्ठ न्यु ग्रामयुता याजीहमभायाण्या (क्बलं त्रिंख गांव भागक दिन वान। मगाया वान्। व वाक्वादात्रभाककत्रामा॰म मिठाई अमूहलमानक्ष मां अक्षे विद ् नाना भुका तम ता में इंडा कि पुवर मकल जा बनक दिन शिति हम अर्था ए (भाषाक धृष् পুত্তি বস্তপরিত্যাগ করিয়া ইজার জানাজোড়া

रेजारि नियम कानाविषांत शानुका कि जिनका शामित विष्टिन कि जिन नियम शामित काना शामित वाका शामित विष्टिन कि निर्मान काना शामित वाका शिक्य कि जिन कि जि कि जिन कि जित कि जिन कि जित कि जिन क

जि॰न जाब्याशि वाक्षा जा्या भामि विष्णा लिक्काकरत्वे अर्थक शैविष्ण लिका

ল্নিতে বাঞ্চলরি।

ন, উ, আপনি যাহা কহিলেন এ তাবং

নতাবটে বিজ্ঞ ভদলোকের এনত ব্যবকারনহে
ভাই তোনাকে নকলি কহিতে হয় ইহারনধ্যে
কোনই ভদলোকের নজানেরা তোনার জিল পাদুকা ব্যবহার করিয়া থাকেন এবং কোন নজলিশ অথবাদরবার বাইবার নিনিত হিন্দু
ভানি পোষাত্র ব্যবহার করেন ভাছাতে भाभि विष्णा विष्णाक द्वा अर्थक शिविष्णाका

वाक्षाना निथिए अ भिष्ठ जार्गम्मा अ षाजारम (इयुद्धान कर्त्यन छ जभागत महिज भाषात्वित्रक्लिन हेरात छ खत्रहर्यक भव गर्भी (छत्र हिङ्गार्थ (कवन हुण्यात्री, काश्त्रवा (कवन मुख्य विश्वाद्य, शाठक द्राञ्चाप्तत्वा मा॰मा मि शाहात, हे जानित छेखत क्या क्रिय थेड त्राक्ष (कवल जन लगांकत भाव। विवतं व व्हे जिह यि जम् लाकित वाष्ट्राद्ध किंगात किंग मन्पर थाकि जाशांत्र भूगक्त छेड्ड क्रिन।

वि, श्र, जान महामाय मानियाछि (य जम् कनूत .) जानताथ, किंछ, (लाक्त ग्राह्य जानक लाक अजा ने सक जायां इ णना छाजीय जावा मिल्ड कतिया किश्या थाकिन गथा कम, कवूल, कमावन क्युला, कुडां, क्या कवि, का जिया, हेज जिल ककात जावि क 

करवन नाई जाहा हर्ए वजाम्म वाका वाब शंविक डाया थाकि उयावनिक डाया व्यवहात क्रात्रन्।।

'যাবনিকভাষা

, সাধু ভাষা

जासामा, मामाना, नीह,

নেখনী কলম

५ नाभथ, मिवा কসম

कड़ा "> मक, कढ़िन,

कमः र वज्न, नूरम,

कवून > बीकात्र, अञ्चोकात्र, शुजिनु, छ,

क्निवि ३ (वन्।), गणिका, वाबाक्ना, क्लिहा

क्रामणाग्रा मः, मन्त्राचानः,

(मिथिना॥ छ॥

् वाक्षणा निथि उ अ अ उ ज जारनन्। अवर् षाज्यारम (इयुड्यान कर्यन छ जगान मिर्ज मास्त्रत्राक्तं । इरात छ खत्र हरिक भव गरमी (छत्र छिङ्गार्थ (कवन छूल्यात्रन, काश्त्रवा (कवन मखरक किनायाद्रन, भाठक द्राञ्चाल्यव्खा सना न मि णाश्तु हे ज्यानित छेल्त क्या क्रिव थे त्राक् (कवन जम् । जारकत् भाव। विवत्र ग क्रेजिष् यि जमुलाकित व्यक्ताद जिनात किन मन्पर थाकि जाराव भूगकत छेड व कि विव ।

वि, श्र, जाज महामा म निया हि (य जम (लाक्त ग्रंड) चानक लाक , यहा शिव जायां : षाना द्यां जीश जावा मिल्डिं किशिश किशिशो थाकिन गथा कम, कवून, कमावन कशना, कुर्डा, क्यां किन, कािंग्रा, ইত্যानि ककात जाति क भाष्ट्रम माने भवः भाषाज्य मिन्ज गानाभ 'उ

इराज जानांत्र माज कान (ए। कान नार जारा रहान नारे जारा रहान वजाएन वाका वाक शंविक जाया थाकि ज्याविक जाया व्यवहात . क्रात्रन्।।

' यावनिक जाय। সাধু ভাষা

षास्त्राक्ष, क्रम्, मामान्।, नीए, किंग्(न )

কল

(नथनो কলম

माथ्य, मिया কসম

कमारे > शाध

कमूत्र . ) जाभद्राध, किंहि,

कड़ा ") मक, कढ़िन,

कमः 🤰 षण्ण, नूरम,

कवून > बीकात्र, अञ्चोकात्र, शुजिन्, उ,

कगिव ३ (वम्रा, गिका, वाबाक्ना, क्लहै।

कामणाया म॰, नन, मसायाउ,

( २७

का जिया ) - क्वर, विवार, विमञ्जार, विद्वाध,

जागान ). त्वरं, जानीवाद्रण,

क्या. ३ बीजि, धावा,

কাঁচা ১ অপক, আম,

(कह्ना ) तूर्र, पूर्ग,

(क्टाव) शृष्ठक, गुष्ट्र,

किनाताः हेशान्त्र, जात्र,

কিম্মত ১ মূল্য

थश्रवाए) विजत्न, मान,

थ्राठ > व्या

थां । निम्हा, व्यक्षिम,

थांडा ३. मध्ययान,

थाएर भीषु, दुठ, वख,

थाताव > नन्त, कमर्या, कूर्निन्छ, 'निन्छ,

थानाम > गूक, (माठन, উषात्र,

थामका ५ इठाए, जकमाए रिष्वाए,

थांत्रा > उंडम, उप, श्रिभाषी,

थाज्या > कत, उभ्रचण, ताज्य

न ) विनाम, इउग्र, याज,

थ्व ) উख्य, छेट्क्ष्ट, जुरू,

थुनि . ) . जाननर, जाङ्गार, भित्र (ठाष, गरछाय

(খালাসা) পরিক্বার,

(थानारनाम्) छेनाननाः

(थांम ) উख्न, र्यं,

थाम > नुस्ः,

गेत्रस् > डि.उस, डिस,

गद्रजी > गीया, निंमाघ,

शबी गृथी, मूर्थशब

गत्रक ) जावनीत्, शुरशासनं,

गखन > मानारगिन, याजि निर्वण, यावधान,

গনি ্ শোক, সন্তাপ্ত

्यः । निम्

ঘুস ১ উৎকোচ -

कक्ल ३ वन, ञात्रन्।,

জড় ১ মূল

बावत उष्, ज्वन, वन्यान,

### ८ २५

कवानी > भूगुशाउ

कवाव > छेखत

बायमाम् मम्माख, मर्बय, श्वावामि,

खाठाई > शबोका, विव्यक्ता,

खायगा 🧦 स्रान,

जान > श्राप,

(जल्ल ) कादागात्र, कादाग्र,

(क्रोनभी ) উक्कन, (मोनर्ग),

वाँक न नग्र, विख्य,

वाँ हो। ) विथ्या, जामङ्ग

हेक्द्रा ३ किथिए

छिडा 🖒 वाँका, वक्र, वक्र,

र्रम र दि

ठाणास > एतिक्ञ

छ। ७३ १ विद्याना,

ठाउँ। ১ উপराम, स्निव,

क्षांचा भ जिया, भी उल, श्यि,

ठाठ ५ कथि, काश,

ठिक । निन्जि, निर्शाद्विज, यथाथ

एत > ज्य, नेन्, जान,

छाकङ्का, ममूर

जानि > छेश छो कन

(छोन ) शुकाब, धाबा, गठेन,

ঢांका ১ আচ্চান, आवत्र

िव > स्थ

एकायः ) शुरव**न**कत्राय

ভর্ফ ১ - স্ক্প

তুফান ১ তর্ব

जागामा नीयु, मुज

তামাসা> (को ठुंक, कावा, इङ्गा

তাজ্জব-১ চমৎকার, বিষায়,

তগির ১ কম্চুতে,

हत ) यून

माया ) कनर, मुन्हक

मावि 🤈 भाभाः

रिक ३ वित्रंक,

विषय, भीन (मण ) अनुःकद्गण, भन, रथन ) भाशिन १ वाकुत, वात्रय, भूथम, উত্তম, लाम, द्राम-পসম वाश्वाज, मागाना, क्रमू, পাজি , भूजु, भित्रगात्र, क्नाम ) विथ्या, कान्निक, विनिगम, शनिवखं, > शन्जिनिधि, বরাত

বৃদ্ধি, यल्जा ७> दनिशाम) ভাঁজ ভাগড়া পলায়িত, ভিতর ১ स्वा, स्वाइन, (ভाর ). পুরুষ, পাতঃকাল, স্বীকার, मध्युत . > यम् त महार र शुक्ष,

নিযুক্ত, পুৰন্ত, म्मन । भवागमां, याङ्जना, क्रमा नाशा > नािक्क > মত, ধারা, नाफिक > शुनय, बाधीयं डा, (मानामव) ब्रीजि, ১ ক্লেশ, আগদ, ् शायन, अश्रकाम, वामी, विवामि, शुजिवामी, धानाथा- ब्रिडि,

दभन्न,

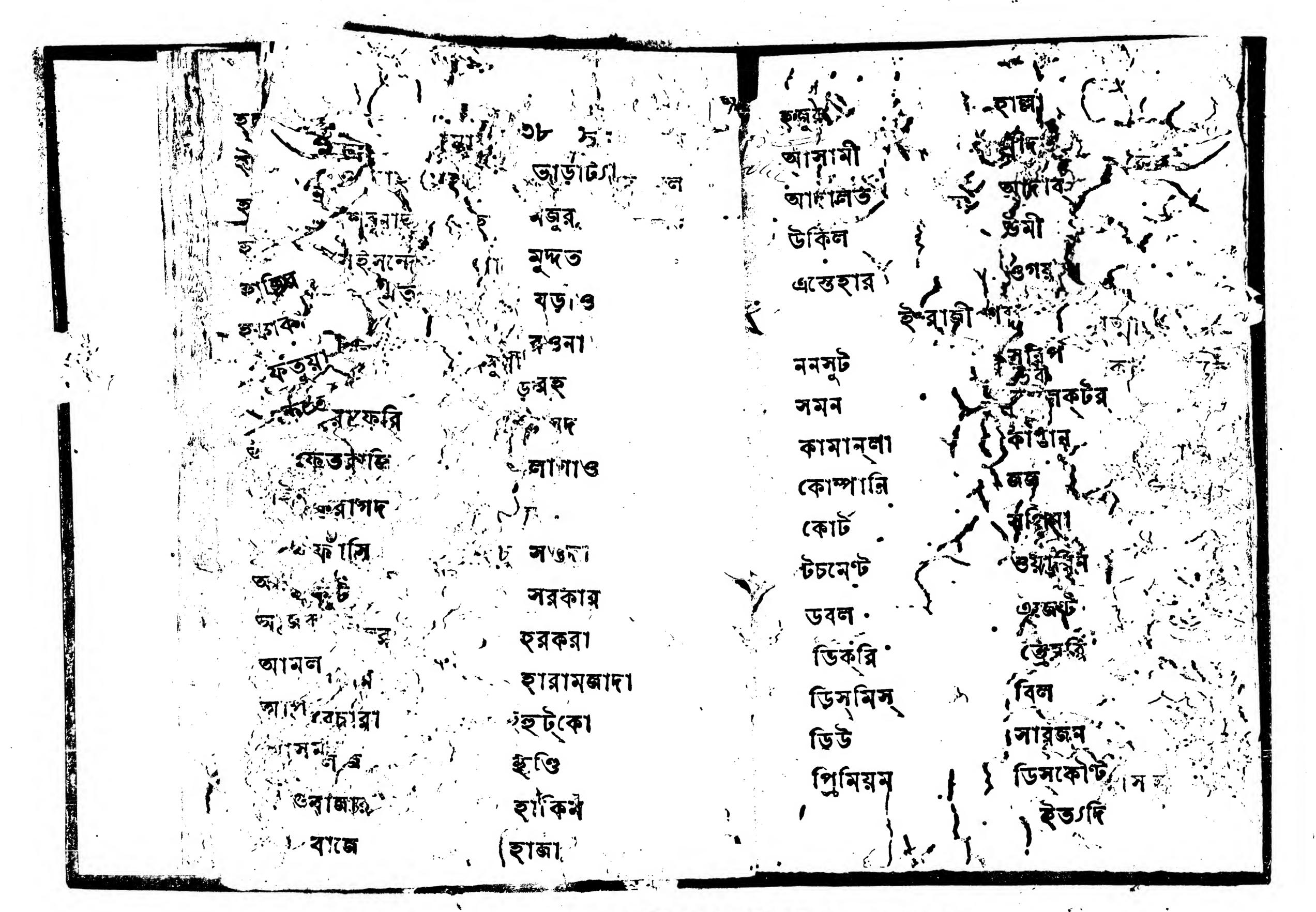
जर्ब

```
अश्रित ।
           বিবেচনা
 मांहा
           স্ত্য
 সাজা
       उ" शित्रकात
 সাপ
সিদা
           न्नवन
           ক্রাণ : দ
जून
ज्ञा
সেওয়ায় > ব্যতিরোক,
            কলহ
           সত্য, ব্
```

এমারত সংক্ত এসারা ওজর ওগ্র ওসোয়াস ১ ওজন ञ्यात्मभा 😘 व्याभिन (य जकल निर्जन्तिया আকাশ लिन छार्। जमुलाक अवरास क्रिय छिन्न, विनक्नन, जान (मक्था मडा वर्ष किंद्र किंद्र) > रेमिथिना

े खथ्न कवानवन्ती वाना हैं।का **ह**क्टो एोकीमाञ्च िठिकाना তহ্বিলদার

INSECT DAMAGE



INSECTDAMAGE

विश्व कर्ण मेलक वाद्या क्रिया थाएकन विश्व क्रिया अपनित विश्व क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

भीद्रव क्रियो नियु अ श्रांचिमानन क्रियं अप्रांचन जाशास्त्र कर्न भी लियाम स्रेडिक क्रिन (कर्क्ड विना रहेया किनका जाय • जातिया थाकिन कान याणि काराज पात्रा कान उम् जत्र जागावान् इलाकित मिश्ज- जानाभक त्रम शरत मर्बना याजाशार्जत नाता जाजा हो इस यि जाभगात विम्यात शाह्यं। शुक्त न कति। ज भारतन जरवर केंग्रात, भूजिभिंडर्स (माप डाँश्व छान छउन्श्रि भे म्यामीन धार्मिक वावू कब्रिय़ा (मन श्वेष, याक्रस्क जिनि नह्ज থ্যাত হইয়া অধিক লাভ করিতে পারেন ভাহা স্বত প্রত চেপ্তাকরেন এই প্রকারে অনেকটোল क्रीवाज़ी इरेशाष्ट्र वव् , वरेकृत् । इरें जिल् हेश्रां हे विद्युष्टना क्रम शिष्ठ महिन लालाश क्रिमन चाष्ट्र किना।

वि, शु, जाभिन यमकन कृष्य कि हिल्ला है। हेशाउ जामात जनक मन्दर किया म एहेल्ड्स

# INSECT DAMAGE

किन्न महाभग्न अक जामुग्र (ताथकंति त्य अम्ब जोग्र क्लोता वि ज जुल्ला किन्न हिर्णा अकर विक्रम क्रिन्ट महो प्रति आहे । एक जुल्लाक जामम भूमर मा मूनिए महो मरहाय । इराम हे हार्छ कि मूर्ण कि भिष्ठ क्राक्त है कि हिंशों शास्त्र त्य महाभारत जुला खगराम छ छन त्याचा जात रहिश्मा हे ज्याहि जानहाँ में छ हम्र चुक हहेगा करतम यथा ज्याम शिष्ठात मार्गा चुक्त गान हिर्णा मण गान दियाह जामि र • ग्रेका हिन जात जात्र ज्याहि ज्याम विद्यान वृक्ति नाम धनवाम क्रिता हे ज्याहि ज भुकात हहेरत जुल्लास्यम क्रिता हे ज्याहि ज भुकात हरेरत जुल्लास्यम

न, छ, अहर जारे म्न अवाक्ता (हम अक्षा व्यक्ति जाराज नाया विष्मवज क्तिकाजा अथान (क्रांन जाराम लास्कर्त जानुतान ना छन्ना जात (व्यक्ति यहिकान वालि ज्यक्तिन करतन

उत्य जिल्लाक करक् यमुक धना हिया (गल किहान कि विषय श्रेषिक, अभुकात्र मान कतिया कड लाक मतिम इर्याष्ट् जारात्र माकी यम्क श्वाहात्र भुज्जिगियाष्ट्रनयिक्षिक्षाननाक्षत्रन छत्व डीश्वाकवज्ञान्ययिक्क्वत्व ज्ञान् व्यक्तिर्वागर्वेण जाशाज्ञनाममूथाण्यु अभानि याना (जिंदी क्लानंब (नियं क्उच जाराव नाम कतिल (मिनि जानगायना, जात्र जान) लाक्त म् अया मूर्विथाक्क चानि शायना नर्वना जात यमि कान लाक छेखन जाशाज करत्रन ७ छेखन वैद्योषि পदीयान कद्मन उत्यव्हा । भाषा भूय भाष कनव एक भूरताशिक काशाज निष्ध्य किन्नु वाय (मिथाज भाउ (न क्रिक्त जाभन भवीव मुभ्यार्थ नाव जना लाकित छे भकात कता मूर्विकाकुक जाभन जो बाशाक भाज मनीयन जाक क करहा

यथः

स्याक म्याज्ञ ज्ञाज्ञ हिला का का निर्देश । भन्नी

वाक्ष • मृजा काया भूगुगभून। क्लिमना रेजि। তাহ্মরসহিত কোন সম্পর্ক নাঞি এত বিষয় আছে ত্রবু তাহার ভালবস্ত্র কি আভরণ কদাচ किछूडे (मयना यिम किङ् जाभनि जान थाय अ ভালপরে ওন্ত্রীকে ও তেমনিকরে তবে কছে ওটা ञ्जान अश्र । य किष्ट्र मिथि जिल्लान क्विन (एवा जात (एवी मूर्डान माज धर्मा कर्मा किछु हैं ना कि यि (कह के नंकन विषया जाभन ्षाशन विভवानुनाः विविष्ठना शृद्धक वाग्न कदान वव भाषा जिल्ला कि क्वां कि कृषिय मास गुष्ठ इइ या, दितः व किथिए २ मियाथा किन अने ज जानित्व णांनक जागनन् क्रबन कान ित्रम अक्रवाङि णागज इङ्ग्लान. जाभन विषय जवगर्ज क्राई जिन शांत्र (मरे वािक्ति वक्षेत्री कि मुरेषेत्री णिका मिलान किन्नु भावकाष्णत अनुकाई इ उक् किया शिक खवलोकी क जावाक। कि इंड यमि जक्त श्यान তবে के जागंज वाकि जिङ्गि है। काल इश्वा वाश्वित जानिया कर्ष

28

কি কহিব আমার কপাল ঘন্দ নতুবা এমত লেকের নিকটে কখন আসিতামনা ওছে নহা শ্য় শুনিবা দুটীটাকা আমাকে দিলেক এই অহজারে আমার সহিত কথা কহিলেকনা পাৎসাহার মোহর মাথায়রাখি নতুবা ওহার টাকায়পুসাব করিয়া দিতাম, যাহার সাক্ষাতে কহে তিনি কহেন তুমি ভালকরনাঞি এমত লোকের কাছে ভালমানুষে যাইবেকনা তাহা কথিত আছে

#### यथा

বরনপিতিক্ষা বরন্পবাস বরনসিধারস্তক তলে রাসঃ ৷ বরনপিঘোরে নরকে মরণংনচ ধন গরিতি বাদ্ধব শারণং ৷৷ অতএব বলিভাই লোকের এস্থানেঅনুরাগ পাওয়া বড়ভার,বিশে বতোতিক্ষুক নিন্দক ওশতু ইহারদিগের নিকট কথনই অনুরাগ পাওয়াবায়না

यथा

जिक्कृत्कनानुवारगान् खिनानुवारगाञ्चि निन्मत्क

কীর্ত্তাং দানের সোহ্যের বা শব্র লোকস্কার্ণ কথা। অতর্থন ভিক্লাকক কে পরিভোগ করিতে পারেন অভিশয় বিনয়ি পুক্ষকে নিদকভক বিটল বলে সুন্দর সুপুক্ষকে তাহার শব্রা শব্রা করে বিলয়ে করে চাম্ডা নাব সেনকল নিন্দার কথা পুহণ করিবানা আর ভদালাকের উচিভনহে যে অনুসন্ধান করিয়া কাহার দোষ গুহণ করেন ভাহাত্তে যেসকল গণ থাকে ভাহাই পুক্ত

यथा खगगराखामाः मुजन वनता मुर्जनमूर्थ खगा प्लाचायाखा किमिन भन्नमः विकास जन । यथाजीमूर्जारयः नवग जनश्च र्वाति मधुन यगी भीजाकीतः वम्राज भन्ननः मुःमञ्जनः।

#### ञ्जार्थः

मायक विवास खन मूझनाउक्स, पूर्कन मूर्थाउइहात विश्वती उहार, ज्वालास, क्रमधि अन भाषकति शान, वर्षा क्रमस्य एएश श्रम् मान, कीय भारतमभ विषकप्रशः वमन, एक्ट निया अहै

वि, भू, जानगरामश (जामां कि कि ज्ञामाकि अरे किनिका जात्रमाया जम्रकारकत क्रिनंत ठाति नाठ रम बाह्य हेराउ यागात यानक मान्य रुरेशाष्ट्र १७ भू,। वहेल म्योनका ना रुरेल इन इयुना इशाउ उम् (नाक्त्र चरिन्ठाजात्र . काइगांक, । २ गु,। मन गिं भश्मायाद्या (हड्डाक वियाकिम नक द्विन, १० भू अम्म माजिब्र हेश जिन् । कि, 18পू,।म्लाभित्र पिरभन्न एक्ष्यमकलाक बणी ज्ज बाधिएज किई वाब स्य किना, १ द्रभूत प्रवास मकल इन भिन्न महिन किक् भवा वहांत्र कर्त्र ने ७ भूत मल क्रिवाब फन कि 19 भूत कान लाक यिष कार्षि बनाकां वार्य जाराज कि कि,। ५ थु,। এक वाकि कान मनजुक प्रांष्ट् भिवाकि (अपन भविकाग कित्रा वार पान गाहेर्ड भारत्रिक्ना,। २ भू,। ४ नभित्रा माभन् (सह। स काशास्त्र खे जान करबनकिना, । 30 श्रा कर छ। जिस् कि अकर मन, गं के शु, । तु। का लाता किम्बर शेंड किनी लाक, ता ता जा ज म ज जा निक ता जा जा ज कि जा निक ता जा जिस् के म न शिंड के म न शिंड के कि न शिंड के विष्णिय म न गरिया गरिया गरिया के जिस् के जिस के जिस्क के जिए जिस्क के जिए जिस्क के जिए जिस्क के जिल्क के जिस्क के जिस्क

न, छ, द्वाम, वृक् वृष्ट्वाभाव छ शक्ष छ कि द्वा ह ह्वा हिन छ छ दि युक्ष ज्ञानक गांचा गांचि था है छ इ हे दिक का द्वा हिन्द हिन्द कि निग्छा छि श्री स दि दिहन कि दिसा दिन छ है दिक है है। छ कि जू है कि कहे है है दिन दिना यो सेना !

े मन्न जिन्न , समान यम् जा जिन्न या ए जारा भाषि निमिन्न यान कि वाक्ष मृज्याः यान कि प्राज्ञिनामि रहेल हैं शहरणात्र यान कि प्राज्ञिनामि रहेल हैं शहरणात्र योनक रहें या प्रोठे।

२ (कर्वन प्रनाशिव एक्ट्रीय प्रमुख्य अग्र निष्

मान्य किनावागुगवा विद्यालना क्ट्रनडाङ्ग्लिङ्

७ मनक्ति ए मनशक्ति व च जा अहे, जा शन् म त्वा मरथा कान वा जित्र वा हो डिकान क्र क्र कुम् वर्षाए भूतान बाता अ मुनाशन निवान वनः शिक् माक् भाषामिक म उशिष्ठः क्वेल व व। कि मन्त्र जिल्ला निकार वाजिक्षा वाजन विषय ष्यवभा कद्रान वव॰ याभन विंचदानुभादा वाद्य कतिवात्र क्रमञा छ जानान जिनि (मई व्यायाश्र युक्त (नाक निमख्य)- कतिवात कक्त कितिहा। (मन' व्याभना मालेब निका जावाभन कूलीन कुत्राक्षत्। वड, उत्र कूनोन वड, अव्याश्रीक वड, मिर्कुर्फ. পুনাণ নিম্জ্রণ হয়পরেসিধা ওপত্র দেওয়ান্ত্ शांत कर्या मिवाम निर्गत ममाय निमानिक वा कि नक्ल म्ल शिव्रं वानू गिंड लहेशा क्या कर वि वाहीरिज जागमन करतन मनश्रीज भाग मंब्रिस् किथिएकान विनम्न कि तिया गमन कि तिया थाकिन

new you

विनिया काल ग्राभन करतम अध्राभकिता मजाञ् क्ष्रिया भवन्भव नानां भाष्युव विठाव कविष्ठिष् कुलुक्ड कूनीन मङ्ग्या भक्न . वरः कून्। पर जकन कुनकोत त्रांथ्य केंद्रिज्ञ । राष्ट्री পতিকে বেষ্টিত করিয়া কুলীন সকল বসি शाष्ट्रन जिस्किम् कर्जात निश्चावित अभू बंभूक ज्ञान्य हो विद्यालय मार्थ । विद्यालय । विद्य निमुख्ति जिन्न जाना लाकित् गमम वात्र कित िতেছে এমত সময়ে অতি আত্মীয়বন্ধুবান্ধবসম ভিद्याङ्गात ज्लाजिज्वा भर्याद दल्लाजिजानि या उनिष्ठि उ रहेलान उर काल मजा इ नकल गावाजान भूवक जामिए बाको इसरे ई जगिन প্জিত বাধক সংখ্যাধন বাকেগছারণ পুরঃ सुत् व्यञ्धिना क्रान जल्पात्र म्ल्मि ज्याधा विज्ञान श्वक जामत उशिविष्ठ श्यम किन्दिकान विनिधि बिक्छोभा क्रान जमकर कर्त्रन्त्वावातावि अधिकश्ह्रीष्ट्यनुमितः मजाञ्च मङ्गमञ्च क्रिशा माना हन्दिन विभिन्न क्रि याश मनপতि अधूर्याज्य करान (गाष्ठा भाज जानू र्कित्र निकिरेशाए, डाइनिज्ञुनुन् इय कुलीन ७ अक्षागक नशानाय नकुले ७ जन्मि करतन शरत शतिहातक निकारणी हन्मतित वाही अ शूज्ञाना जानिया कर् जागुहन्तन काङ्गाक (मध्या यांकेटवक अभग्य श्राय जानक आन विद्यास इरेशा थाक याइकु ठनमान में नेप्रकि গোপ্ত পতি হয়েন সেসভায় দুইতিনজন থাকি লেই সুতরা বিরোধ হয় পরে দলপতি বিরোধ স্তাপনীকীর য়া দেন অগ্রে গোষ্টী পতির চন্দ্রক্ইলে मज्ञ भ्राक्षात्र इशं जल्भात् मनभिज्ञ नमा इश उৎপরে অগুপশাদিবেচনা থাকেনা একাদি क्रिंभरे माना इन्त्र रहेशाथाक भारत मकले हैं लालन र इराम शुरु न केतन जन छन यो श्वा

অভিনাহার আহার ক্রেহার প্রেক্ ভাষার আহত্রকরির পিকেন পর্তর্যা বিনায়ের অকপাত করিয়া দেয়ক ক্রিভিন্ন নারে সন্মান পূর্ব সকলকে দানাদি পুদার, কর্মেন্ই হাতে দল প্রতির যে লভাহ্য ভাষা আমি প্রার অধিক কি ক্হিব অপিনিই বিবেচনা করণ।

৪ উত্তর, দলস্থারাকি পিণ্ডিত দিগের আপন
বাটীর, কর্মোপ্রভক্ষে বংসরের সংখ্য প্রায়
দুইএকরার কিঞ্চিৎ২ দিতেহ্য এবং দুর্গোৎসব
দুইএকরার কিঞ্চিৎ২ দিতেহ্য এবং দুর্গোৎসব
দুইএকরার কিঞ্চিৎ২ দিতেহ্য এবং দুর্গোৎসব
ব্যক্তিক্তে পূজার সময়ে ভগবতীর প্রসাদি
দুব্য নেবেদ্য তৈজস বস্ত্র ইত্যাদি দিতে
হয় অন্যুহ লেমকের পূজাদিতে যে ব্যায় হয়,
ভাই। ইইভে দল পতির প্রিক ইইয়া ব্যয়
থাকে আর দলপতিকে অধিক বাক্য ব্যয়ও
ক্রিতে হয় তাহার কারণ দলের ঘোট প্রায় সর্ব

कि उन्हाल के श्री का विश्व कि स्वाद्य के कि स्वाद के

ভাতি ও ধর্মথাকে যেহেতু কোন ব্যক্তিকুকর্মা করিলে তাহার বাটীতে কেহ জলস্পকরেনা এবং প্রদার্পণও করেনা ভাহার সহিত কাহার নৈকট্যতা বা কুইয়তা কিয়া আত্মীয়তা থাকি লেও দলস্থ পোকের ওদলপতির অনুমতি না হইলে যাইতে পারেননা ইহাতে আহ্মাত্ ধমা রক্ষা পায় আর একই যদি মিন্দাপরীদে পতিউহয় তবে দল পতি জাপিন গণকে বলৈ। তালাকে উদ্ধার করেন ইহাতে বাহার জাতি রক্ষাপায়, জতত্ত্বিদ্বা দলের ফল আগুনি

দলভুক্ নাহ্যেন্ট্রেবে তাঁহার অর্থেক্ যুদি
দলভুক্ নাহ্যেন্ট্রেবে তাঁহার অর্থেক্ ক্ষতিহয়
থেছেতু তিনি কোনকর্মা ক্রিলে তাঁহারবাটাতে
কৈছা যায়না এবং তিনিও কাহাকে নিমজ্রণ
করিতে প্রারেদনা যদ্যপি তাঁহার কর্ম আটক
মুর্টা থেছেতু নানা দেশনিবালি অর্থাৎ বিষ্ণু
পুরকাশী থেড়া পুভূতি স্থানের ব্রাহ্মণ কলিকা
তার্য অনেক পাওয়া যায় তথাচ গ্রামন্থ লোক
তাঁহার বাটাতে পুনন না করিলে জনবল
তাঁহারে একাকী থাকিতে হ্য় ভাহাতে লোকে

ত উভিন্ন, দলপতি ত্যাগ করিতে পারে কিনা,

्वश्ने ज्ञिन चिं विनिक्त नग्रं क्रियाह (प्

কেবললোকীত ব্যবহারাণুরোধে এক করিকেকে কেবললোকীত ব্যবহারাণুরোধে এক করিকেকে শেষ্ঠকরিয়া সন্মান প্রদান করিয়াছেন মান্ত্রিভ এব এ নানদানা ব্যক্তি মদি দলপতির মান প্রদান নাকরের তকে তাই বিরুক্তি কিকরিতে পারে সুতরাং মেব্যক্তি স্চুক্তি কিকরিতে পারে করিয়া স্থাপন স্চুয়ে দল করিয়া স্থাপন স্চুয়ে দল করিয়া স্থাপন স্চুয়ে দল করিত্যাগ করিতে পারে।

১ উ॰ দলপতি আপন স্বেচ্যায় কাহাকেওঁ
বিনা কারণেপরিত্যাগকরেননা করিলেও করিছে
পারেন কিন্তু তাহার নিমিত্ত বহু বিরোধ উপ
স্থিত হয় তাহারকারণ দলস্বলোকেরা জিজ্ঞাসা
করেন্থে নহাশয় আপনিঅমুক্কে কিঅপরাধে
পরিত্যাগ করিলেন তাহার কারণ দুর্লাইতে
নাপারিলে বর্ফ দল ভাঙ্গির সন্তাবনাহইয়া
উঠে ইহাতেই বোধ হয় যে দলপতি ত্যাগ
করিলেই করিতে পারেন এমত নহে।

ःशेष्ठे जाि मार्खित थकर मन वमन नर्

क्यात किन गानि माकात्रि कामाति निक् उन्नाश्न का जिल्ला का किन्न वेर्षात्रिक्शित समुकाठीय जावात वाव श्वा विषय जिस् प्रति आहि वक्षा जिल् पुष्टिवन जुन् है निक्त मिर्गत पिरिंडि के एउँव, व्यानिश्य अन्वनाव नयनिड युजमन (मिथि जि भी अ है है। मिन भि जि जा भाग आत्रकाश्च वाजित्वक अनाजां निह् आत श्राज्य अवज्ञान भाग जिल्लाक ज क्रिक मर्याप्तक 'लाक' मनशि श्र्या थारकन । वि, श्र, जाभनकात्र अनुगुष्ट् ज मुलामलात विषय जारं जारंगर्थ इंदेनाम किंद्र मान श्वाकार्णन मन्त्र प्रनिया कर्ने हेरा म्निया विमायाध्य क्रेयाणि ज्याजा जाना क्राम् भग्नत्र कि वाभन स्वद्वाभृवक छ। श्राव िरगत्र ल ् जुक् थाकिन कि डांश्रा जश किश्वा कि

हेशाङ छेज्छात्र मन्द्राज नेगात वाशनका अभूयार (यश्का अर्व न न न जिल्ला अर्थ न भूनिलाम जमनुक्ता श्रीमेषे विकालित छिन्त शकान क्रेलिक क्रिक्ति भारगात गार्वत नाघत ' रग उर्भक म्ल्या उति। श्रीम क्रहेर्ड शास्त्र। ज्ञिन व्यविद्यहनार्षे येषि भूनज्ञ ज्य जानीत कथाय जाति विक् जाल रहेव पहा পতিরপুধানত্ব দার্রভিদেবদিগ্যের অপমান হয়। व जामनत वृतिवातः वृद्धि जिमाक विवाज कत्रिया हि (य मनभित्र विवा मणजान मिद्याएन এव॰ याशाएन वासेन ठाक्त मिश्नित्र मात्नित्र जारज्य जाधिक। इस्य जार्थ मन शिङ्किशकत्त्रन यि वन्ध छाञ्ज अनुमुद् नरेशा कथा कब्रिडिश्य भी एयमन अक्राङ्गिविधि ठक लाक्त्र शान भक्तरभं न्ख्या এ जार्मावः व्यात यति वन (य मजा मध्य हन्त्र जाशाक

নাই, অংশু পোষ্ঠা, পতিকৈ চন্দ্ৰই দিয়া থাকে,
নাই, অংশু পোষ্ঠা, পতিকৈ চন্দ্ৰই দিয়া থাকে,
নাই, অংশু ক্লীন সহাৰম্ভিনিক দিও হয়
কলে ক্লীনের প্রকি ক্লিবিই শেষ সত ধন
কলা ক্লীনের প্রকি ক্লিবিই চারি নেলের
ক্লীনের প্রকি ক্লিবিই চারি নেলের
ক্লীনেক ফ্লিকিনা দান করেন তাঁহাকে
পোষ্ঠাপতিবলৈ ক্লেবিতারা তুই ছইলে বেসম বর
পোষ্ঠাপতিবলৈ ক্লিবিয়াছেন গোষ্ঠা পতির
ভাকে চন্দ্র পুদান করিয়াছেন গোষ্ঠা পতির
কল্পতি দেবনিবেদিত পুনাদ গৃহণকরিয়া
থাকেন ইকাতে তাঁহার দিগের অপনান কি

विद्या मानिया हि किनिया जा या उपन नार्थ अवन प्राचित का या माजि प्राचित वा मान प्रतिश्री विक का स्वाधारक करवा विष्यु या विवासन प्रतिश्री विक का स्वाधारक जरवा वर्ष श्री विश्री रित्रीय, रार्थ जानि प्रतिश्री व्यक्त

शास्त्र उत्राद्धारायक्त नार्य (कर्राक्रिक् न, फेड्रा, द्यामान कथा ब छेड्र भंगाए मभाजि अख्यामाक्षेत्र (ज्यान निवास क्विता जे याति ।योजाकात यसिकारत द्वायन जनन वाहिनेट बोराब कवा महत्र । बाक्त नाही हिन्स नाथि । विशामार्था क्राजनमः इंगाउ स्ताध म्हेर उर्ह्या मूम्म माज माजव भुजि जिन् नीजि नाई माञ्चा प्रमानिक स्ट्राम यात्रीन किह खरे एंड जाम जागाक गण्डे केवि। अहेकनिकाडाग्न गाया प्राथा प्राथा । जाशात्र भिष्यत्र म ला (कववारे त्राक्षण रेशांडिं कुणीन । (माबिया । उन्माब नेकालेरे सार्ह्स जात्र कान कार्रिंग वि, भू, मण विश्वक प्रानक भून कतिया व्यात थक शून कतियो अविवास हा छ

हिन्द्रीत कि विश्व कि कि ना जा मा त्रिया प्रमुख्य निने २ भेतियात भित्रकृत्या कितिया नात्नत्र नाधिता श्रीकात श्रीक किथिए जाश नाराजन निनिखं क्निक्। अयु दिन दिन्द्री क्रिया हारिकान यार्शन कविए एक मिरि वार्यन मारिव ्ट्यानिएंड शासिद्वनना शक्षिणाम निवासि अथ्या श्रीकाश्रद्धा किश्या शायन (य किनिका जिया (यर्गकल जाय)। भारकता वावमाय क्रिंड क्रिन (ज क्रिदर्ल नाम माज जाङ्गा किस्पत भूष्यं काई। वां शुक्छ क्ष वावमाश इस्मा हिस्यम, जात्य मक्क निर्मा कित्रा ाद्यम जाङ्गादा धनुत्रां शानना स्मयाश्राहिक मास जीकात कित्रिया अयि विषिट् वाज

দাই বেহে ভূমিনামল ভাষাক নহও প্রি বন্ধক হইয়াছে ভূমিনত পর বা গ্রমণাগনন করিছে। পারেন না সৃতর লোভ হইতে পারেনা জাত এব আনি বলি অধ্যাপক ভূডাচার্য নহাশ্য়দিগ্যের লহিত দল নাকরিল ভূদ্রা হয় আর তাহা হয় দল পথিরা এমত বিবেচনা করেন যে কলি কাতার নথ্যে যেকয়েক দল ভাছে সকলদলে লংবং সরে যাহা দিয়া থাকেন ভাহারা স্তত্ত পরত তাহাই দেন নভুবা, দল করিয়া কেবলা নিমন্ত্রণোপভোগি ব্যাক্ষণ দিগ্যে ক্লেশা দেওয়া হয় কি না ইহাবিবেচনা ককণ।

न, छ, एल जातक इश्वशाल किया जाती।
शक्छोठार्याद्व किरादि लाजाधिका इशेरिक्ट रिवह श्रेष्ट कथन भूनियाद्वन रेग अधाशका विहास २००१ १० १ ७०१ ६०। ०० १६ किं, इसानी जानक एल इश्वशाल क्लोरगामात सान जागत वर जादिक ठोकाविहास एए उसा किन्दा रावादिक शुक्क कृतिर जाहिन यहि नकान करा ক্রির জার্কি উল্লার। একটাকা বিদায় পাই কর্মান ১০ টাকো লার ক্লোর বড়া পাড়ইকগ্রি

অভিএব একং দল্প হ ওবাঁতে। উচ্চণর দিশের বিচু সূথা হইয়াছে অন্যান্য লোকের বর্জ কোন লাভনাই আরে এলগে যেরাজ্যি কোন কর্মান্যান্ত লোভনাই আরে এলগে যেরাজ্যি কোন কর্মান্যান্ত লোভনাই আরে আন্যান্যান্ত নিমন্ত্রণ হাইত লোভ কিবল লাদ্য শালাদিতেই নিমন্ত্রণ হাইত লাদ্য নাল্লিক কমে ভাইর নামান্ত করিত এলগে লপভিন্না সংগ্রেইইন্ট্রা নিমন্ত্রণ করান ক্যান ভারাদলকাভির্লমন্ত্রান্ত্রণ নিমন্ত্রণ করান লাল্লিক ক্রে অধ্যাপ্রকাশকর্মান্য প্রান্ত্রণ লাল্লিক ক্রে অধ্যাপ্রকাশকর্মান্য প্রান্ত্রণ লাল্লিক ক্রে অধ্যাপ্রকাশকর্মান্য রীভিছি লাল্লিক ক্রে অধ্যাপ্রকাশকর্মান্য রীভিছি লাল্লিক ক্রে অধ্যাপ্রকাশকর্মান্য রীভিছি লাল্লিক ক্রে অধ্যাপ্রকাশকর্মান্তর্মান্ত সংপ্রতিনিম্নারণ ক্রেয়া বহুনান রিভর্লণ ক্রিড্রেছন দল্পনিলি

वाज वक्षन उपहा करें कि विक किया वालन क्षिक्टाउ भारत रामक कथा कथम जान देशव वित्निय कामिना क्लिन वाडि विस्वायतं श्रेशक किन्न कार्यश्र दान्त्रव फिलाइ क्रवाद यहार अवज भूनायायन्थि। ति, भु, भून नश्राम्य जामान्। यानक विवय अवगड हहेगाग मन्नि जिल्ल विषयक क्छक छिनान वायशायशायश भून कित निर् भश्च छ। गांभन जार्गन मह्छन कित्रिया जानएक विक्षंक्षेत्र इंशांजिकि नाम क्रियमनो पार्ट्ज भाकार्शिय वालाई वफ, हेडा वाशनि करिया ছেन, जांत्रणाह्य अ अञ्ज्लाश ज्याहा (यशा छ लाक चड़ (नारक्य मिन्स्ट्रें उथन

क ज़िर्बन्।

जनाश्री भूक्षम, विषया निम्मिक स्ट्रेल जिस्सान नार्थ भ्रिष्ठ मिर्गा बिकामा कृतियक भिष्ठ द्विता माजामगात् जाङ्गातं महत्त्वक्विष्यन, नश्वामय, विख्ड आर्मि 'काविख्ड कार्ज्यन क्यान्यस मिल्हें विसंवित जिन्नाक जन्ना वे किंद्राज स्ट्रिक वागात वामसान शन्त्राम (मर् शिद्धिष्ठं वन मध्धान्विद्या भूनियाष्ट्रि मजामिथा विक्रां वात्र किलका कात्र व्यानक जागां वाने द्वाकु अशिन महानिहागा अश्वं जा जत् । जिनितन योत्र विवाशानि करणांकश्वक न्य (क्रमूरे जिन हांति भाह मक्त अ रहेएक अनुभा न्ति वाश्व किश्वा थाकि। कि कि के निः ज भारे वाश्चन्त्रशंम मिलाइ विमादिष्य मानायाकात चाना अवानिय (मार्क्न मुकानिय जाया छ विकत्निकार्थ अवज्ञतेयाकत्रगामिनारञ्ज तुर ल्याकरक कि खिए शिक्स विजन हिंदा ना

(वजन शुरादन त्राभिया जारारे मिया कर्ना हिराउ किश्रीपति स्माई मुखान मिराग्धत केल्ला ब्रिश् र्वेटजगादा जाते विष्णां विष्णां स अभिकुं । विश्व ज्य ज्या हो । का जी से चित्र (उरे को किश्वकार्त भातमणी र्रेतिन वर जे कन जान विद्वान (नारकंत ज्ञान वानक्रक विद्या निका नाकतागत कात्रगिक जाशाख किए प्रविदे চनाश श्रितं क्रिंडि भारिनागना यिन-धन्य श्रित विविद्या क्रिजिव वाजनगिष्ठि, मृजिकि स्थित शृजी व्यविश्विवाङ् शर्या खवाराञ्च था जारमे शिल् या भूमित्न याक्तिक अपूग इश्वा अर्थाए विस याभम इहेट इय षड वव क्यग्नयं जायात ' वर्षे जावनाननां উछत् बाला विवादानां, कितिएज इर्दिक।

কণার উত্তর কৃষ্তি, স্ইবেক, পিতৃ নি নাজার याक्षा बाइडी बाए वर्षे, किन्नु नकलित তাহার কারণ যাহার দিগের পিটা পিতা शिम्रात दांता धन छेभाड्डन कतिया एन वन अवाता गाना अन्वयाष्ट्रन जावात्र विष्णात विद्वार्शन वर् शङान मिरगार्द्व मरनार्याग भूबर्कित्रा लिक्काक्सान जात याहासा विकृत क्षेत्र वाना कान्य दन देशा कि न कृतिर्द्धा ेष्ट्रन अत्रे क्रिब्रिंडिएन डाँश्वा खार्निन क्वल क्रमा थर्डाठ का निरवाई क्या हरन विष्ठा विषया म्या देक्नवाय कतिवास आविनाक नाहे जात हार का जिला मिनापि का या विकथन वार्गा इवरणत सम्बन्धिन द्राक्षणा ना द्राक्षण

एश, (कर्वा दींगापृथ शर्क वोश्वंदर्भ, वाब क्रिनामित्ज भाव इंजामि • वि, शु, नश्रामय थई कनिका जाय जिति। लाकित वाही जियाना त मिला सम्बद्ध खनिन लाक कानर कार्यानयुक्त जाहन जोहात मिशिक भूग्याए व्यवगं इहेश्राहि य क्रिया न्कन नानाकाठीय जायाब्र ज्या २ गुरु जाबाह भामि हे बाजी यात्रिव (किंडाव कुश्न किंत्र्य) रिकेड - এक (कर्वा पूरे (गनाम खयाना जानमा त्रिक्रीं स्र न्नमत्र (ण्वी शृहकः वर्ग्ज नार्कीच्याः त्रारथने (यरिंगकान मादित वारिंद्ध क्रांज जानार् इंन कित्रा, किञाव महिल्हा वाशिष्ठ भारतिना জার ভাহাকে শিক্ষার করেন বিক

िहित्न वेशक कथा अभागा यायना, जेल क्रिन डिज्हानात् बि-विनर्तन (कठाव जारावा ब्रीपिश र्झ-इंझात कार्ति का बामि शाफारमध्य ज्ञ स्विति निर्मितिया नाना भुकात जर्क विश्वादि महिष्डिक्ति वेक श्रुकात वच्च या या या वा दूता विक्षिति विकास विक कार्य राज्य राज्य नाक विकाल की मुख्या था किन क्रिंबिर् विष्ठिनि श्रिम रेश्ड र्वेशि (जिसे कि जिन वरिया णाल्यान कितिन सुद्रमुकी

বৈগল ভাষিত কৰিয়া থাকেন জাবিগুছের সৈবার পরিপাটী ও মুরীতি এবং নানা গ্রন্থার , আতরণ ও অথর মানির করিয়া দেন কিন্তু আপ্রনাকে দেনি সিতে একসার পুণান করিছে। ত কয়না এওবা সেইৰূপ হয় বিদ্যাল কতকগুলিন পুত্তক পুত্তত করিয়ে অসুবান কার্য মারির মধ্যে রাথিয়াছেন এবং ছেল্লদগ্র জ দগুরি নিযুক্ত আছে তাহারাই রার্না সেইস কেতাবের নেবা করিতেছে বাবুকে জ কেতাবা কথন দেখিতে বা স্পান্করিতে ও হয়না, আপ্রি গুণ্ড নিধি অতএবা জ অবোধকে জা বিষ্টোর বোৰ জন্মান্ত।

ন, উ,তাহে তুমি কি অবোধ তোমার ছালায় আমিজ্লিত হইলান এমত ২পুশুকর রাহা ছাতি সাধারণ বৃদ্ধি দারাও বুঝাযায় ইহাতে বাজা হয়না যেকোমার বাজে আর উত্তর কাম করে কি কুরিব জীকার করিয়াছি নাকরিলে প্রক্রি

दात्र काइव वू देश कारता नाहे, के का वाना हिल्लिहा भूर के मण्याहब कार्त भिन्ने जागा लिंग्किन में भारत जीवर मुक्कि थारक क्रिया क्रिया वार्थन किन्नु मर्ना अकंन वध्यक्षात् क्रिति इय्रमा यथम याक्ष्य किल्यामा क्रशंकथ्नि जाशा वादश्व क्षिन याश्व निश्व निक्ष शृंखक वावशात विश्वतात कान नियाजन द्वीरियना जाराद्वाद्वादिन भग्जी माझ अस इन्याष्ट्रम १य व क्लाइन खनिष जुर्जा वर्य क्रितिया इन जाशा व । वश्र क्रितिल दिन्याभान इयन। अन्ज निष् यात यात्रात मिर्गत कि जाय वश्वकात नाक तिला मिन हर्लाना

वनाः मन्त्रिक णुनियाष्ट्र (य क्रिक्का जाय नान माञ्च इर्हेड्ड छेब्ड कविया अधिकारेन जीपार् अक मिन् ज्ञान ताथिया जिल्ला वादि मुगग माधु जायात्ज नाना भुकात गुष्ट्र इहेर्जाहरू अनकल शुरंक जुमाह्नि क्र क्रिश्य निव्जिश जिशान ना, किं, चिनिया थाक किंद्रान काने ब्राइत मूना भी । या रेगाड़ि स्ति कत्रिया अभि (ला कि इं निक हे ल हे या या या द्वार ए किए कर्म यागात वाकाना ग्राष्ट्र किंहु अर्थो जन नाई (कड़, वालन थ नकन नामक सिंगजा) शिक्षाप्त निगिर्छ इन्हे जिल्लामात्र मिर्गत निर्मार

मिर्गेत होना से जात थान विकास सर्वारे जोड़ेन ने समा हिस्टी शर्म में थि रहेट एहें केरि क्येन कि विद्या कि कि में में मिर्गे रहे केरि क्येन कि विद्या कि कि में में मिर्गे कि कि जिस्ता कि ब्रामित कि मिर्गे कि कि मिर्गे कि कि जिस्ता कि ब्रामित कि माना के कि मोर्गे कि कि स्वार्क का जानिया अथवा सविवाद भी मा कि कहें स्वार्क वाजान श्रमान करता जा हा ता पूर्व केरि हो स्वार्क केरिक केर

के हैं। इसे २ शतान्त जिमाक किया है कि निर्माहित के शिल्यों पिए मंद्रान्य, एएटा है के देखान लाक गार एमिंग, पिर्द्रा छ दिसे देखान कथन गमन हमनाई (यरहें द्रान हैना प्राह्त शातना एक किलका जास्य के हिना प्राह्म जाए जाहाएं एमकल शुरुक हिना प्राह्म जाए जाहाएं एमकल शुरुक हिना प्राह्म जाए जाहाएं एमकल शुरुक

ज्येनक श्रीत्र्र सम्बंक जमानि जानि ना त्य ष्ट्राभाषाना विश्वकात्र ज्य (य किर्डिक् भूखक् अरुत्र नित्रिक जानक काकत्र क्राज्य जारीत कार्निक्षा कर्न, खिन जाई भोज्य मानुष यडी काङ्गाक वाल जाङ्ग कानना यहि जेकन निका मूलात अकि घड़ी जासाक लाइ है। तन म्रावा (ए खर्गा यास खिन कि जाहा गुर्ग क्रिये। थाक (जगनि वक वाकि (क्रान जगा। वार् लाकिय नाणित भाठक वाञ्चन, हिवा क्रभाग्यापु काछ। कड़िया। मूज्वज भन्नेषान भूबक क्रिस्डिए, जार्गिक्योरि (कर् वाल श्वरान्त्र नुप्रदर्गन शृङ्ङि जकवार्गन होका जिल्ल बहुम्ला भा अयाग्य जाभूनि करेवनं भिक्

शाज गर्या के खारनं, व्याज वक्डनं कि कुल्लन रवन थाती, इस्लि जिंक है। खेषध्व खिला जी हि इंग्लिं में फि एसम इजािक विश्व किए विष क्षां अधारा माझ हिकिए माकेर्त्र जार्गिक यूनि রল, যেভরত মল্লিকেরটীকা সমেত বৈদ্যকগ্রন্থ अक्ल हाभा हुई उहि यहा मय नहेर्दन, (म. उँ। डि, हिंबकान छ। उम्नेनिया श्रश्व याडी खान क्रियायिषवनाय शिकाभाषण गुरुष्टी पर क्षत्र कें फ़िक्सी भागा वाहा (ब्राग

कि हाश के हैं कि जाशिन वहें यन जिसे कि স্ক্রেড়াইগতে ধাপি হয়, একজন তেলে, কেবলু माहि शासा धतिया ज्वा विकेश के त जा शाही थानानीका न पात्रा नक कि कित्रिया नमन्। श्रकार वे न्यं कित्रम्भ जार्गन मात्र मात्र पाति विज्ञानान क्षिया वेष आर्बि वार्ष क्रिया यहि वन स्था नश मुक्रावाध वडाकब्रग-अष्ट जाकाब जियाध होका कविया हाभा हहे। उट्टाइ मार्च मूर्ना हे ्यगठ कथा राजा कि ना (य' जारे। ब अथात्रात्र व्यक्षन मालिः भू जिमिन भूग उन्हें पान शिल्भक लहेश (लाकित्र वाष्ट्रीएक र

( 293)

शक्ताज्ञां क कामात्र (क्रक्क (मार्श) है। ईंड, अल काषि गावा जी जर्बन शुक्र कित्रिया कि बिल्ट धन . मक्त्रं क्रियां हिं जानर कानजी भारत जाहाह सिथिया क्रिकार्क्यमिवन जमाद्रीत हिन् का भुज्ज वांक्षणा जावाय ममाहात शब श्रुकाश हे इंट्रिक्ट्, याशिन हाहरवन, उत्व मिकि जाशान्त्र कात्र, जात्र अक बन कामाहि जन्दाकारम् नेक्ष्ण विभिन्ने । किश्वी प्रसिन्ध निर्वत गानार्यभागनेतानार्यकार श्यक चुकि लिए। यो मायं जागर्श, मी शिका भूड (भ उर्कार्निकाभाकम् म उक्थावानिक भावादि लिए डे। ब्राह्माद्र वीम अंग्रिश कर्ताड 99

ज्ये (म् (डाग्नांक क्नन) विलियक शार्डित लाशाः मेंभागः (मधिवाद्वः कि कायः) अक्र-वर्धकः त्रामात्र कृतिकण्कत्रिया विषाध, किय कान जिलां वात्रव महाप्र हिंदी हिंग जिला मःवाम (कांन शोस मिया पिवा वृद्ध शाहियाए •छाहाभद्रीषान कदिशा गरीमे कित्रिक्छ जैव হয়েতেফুরেরভাঁডি খেক্যাকাণ্ডমোডাআঁছের ज्ञि जेनाभिज्क जाशाज गुष्ठ शाकेकछ निकें शि याग्रावियनायवानिभक्षाधायम्भग्रक्ते क क्रायाद পুত্ৰত হইতেছে लहेंचा, मं अवस्थाई क्कूत्रधात्र-हूँ एउ क्राप्टेमाहि, अक्षन्-निर्मार्शिक्ष তोश्य याणेविका वाष्ट्री (मिश्रिया) यहिन्या, (मृग

इतिनी जामनाति (एक शृज्जिकारश्रेतकणकिसा लिक्षर- नज्ञ जाशक्षेत्र इस्योह सिर्जि एकार् है खें ज को निर्देश नि अयात इनिम निस्तारी अकिंग २ पूर्व देशकारी क्य क्रियो शिख वृहेसा गोहे जिए जाहा क वन, हे बाजी क्षेत्रामानी (एक गीरी इहेट्डिइ जिल्ला (म ज्यम जिल्ला जावना) हे विनिद्धा (य ्रवानय क्यां जिया यायायाया का ठिए दा धम्बन्ध में मक्न बावित्र मास्र रिञात किस्नात विम्या विषय अधिक आत्नीहना

वित्र हे हुछ। नार्ष्य धर्मार्थ स्थार्थ स्थार्थ मानो किनकजानगत्र जागावान महामार्क व्यापियाष्ट्र इश्लीवया जामिषश्राक्षा मिछ इ**ई**या बिद्धानाकति उच्चित्र स् नीन प्राथ्य नं महामिश्रिक नाश्नि जन्मज अस्ट्रन किया. गाते के मानार्ड वाल्किया कामणाख यथा के प्रके - व्याणिन यहि प्रेशिक माला विषयात विष्युत्र, अवगुर्व जि-भाषाति नारंश्यत्वा क्या क्रिया क्रिया

िणवक्ता भागायां क्रिया थारक्त्रे अस्माना शारगद्वे विवदगिक शिर् विनि, वानक भिरगद्र शिष् क्रिया भिग्नि खेखगर गुंह वाकाना ज़िक्श शुक्र क कतिव ब्रह्म वी मुंहार् के भागार्गि वर्षार भाग नानात्र शुक्रक शुक्र जिन्द्रोग कावग वक मञाज स्थिन क्रिया ए नर्ने प्यायी मानाविश गृष्ट शुद्धान क्रीयान्य विविक स्टिंग्न श्रान क्रिया थार्कन वर् वानकं मिशा कि शुकात्, निका इझे एएए धाङ बोजानगात अक्षांमाना किंद्रिश दिशाष्ट्रिन वर्दे ज्ञाननिष्ठ मत्निर्धान

याणच मिरंगत विष्णा निष्णा क्याइयात विश्वास अठीम् ग गतायाण क्यापत कात्रग कि देशांत उन्हेत भूमारम उन्नात तिक्छे व्यक्तां विश्वेत इर्व।

रिनक थनि लाक्ति वाञ्चन किया लालिक ज्ञानिक रहेशाष्ट्र (मरे कालिक जानक भागक नहना विष्ठा देशाङ्कन क्रियाष्ट्र वर् किति कि जिल्हें को लिख ब गांव विश्व व खांख यि कानिमात्र वाष्ट्राञ्च उपनिकार वाष्ट्राज्य छाथाए विष्णां लास्त अन्या अन्या हिन्द्रकान्न अकाष जारह जारू भारति कानिए

याकाकराज ए याचात भेरे मद्भावाका श्राप्तवा किंदु (जानात्र अंभू भे जे जा कि ब्रिंड जाकम है ्राम्बास हेराज कार्यन खिल्लामान ते। हिन्द जाङ्गान उच्चन श्रामित जामान जल्ल्य निवास्य कत्रियाष्ट्रन मिन्नु जात्रा क उज् छित्ति विर्द्ध अभिष चाहि यहि विव्रक नार्हेश फुद्ध विद्या जाय क्डाथ्य्वे। न, छ, जाभनि विद्याः विषय भूगं कतिर्वन

किश्यां हिलाने, छारा। जिस यसे हुन

कित्रित अ भूजे इंह्राचा पद्य अभित्रिक्या ।

विद्धाः विषश् जिम् जन्य श्रा किवानां

किष्ठ सन्दर्श विषेता विषय किष्ठ भूमकेति, पुंछ किष्ठ राय अञ्चल शिल्हा नववाष्ट्र अ वाक्योदि वाक्यक्रमा ज्ञकल शील वाक्यांकि विष्ट्राय निर्भेष जेत्र, जूयुक्जूला काक्यां ख्यांक गायक वाक्क कृष्ट्रशाष्ट्र देशांत अभितिषक कात्म्य ।

ने, छेंद्रणात्र वींबना अकल जाल्यार वृश्यात्र किंद्र भिशादा किल्कात कालाया ए श्रियाद्वन जाल्या जालम वृष्य तुमारत विल स्थयन कांद्रोह एल वृश्यास्त्र वेश्व विरायहना कतिया।

वि. श. मझाणय जीमि णूनियाहि एय जानक जीगीवान लाकित निकित्व के खीनन लाक नियुक्त याजायाज करत श्रुकिनिनुश्व कालगाय दिक्शिन जो त्राक्ष कुर्श हें तुन्या शाक वदः दिकाल याय ताकि कुर्श हें तुन्या खाक वदः याननकरत्र गात रेशिन कुष्टित कुष्टित व्याप्त जन व्याप्त काल हैं कि हिन्न कुष्टित व्याप्त अवन रिप्या के नियुक्त करत, रेशांक जानात्र विद्याना वरे एक वेनकन लाक श्रुक्त प्र পারণ কি,না, আর কোনশান্তেকিছু দৈ জিলাছে
কি,না, আর ইছারা হৈ যেখানে নিয়াথাকে নে
নিয়ত তাইারি নিফট গুসনাগনন করে, কি,
সর্বই মায় এই তাহাদিশের কর্মা, স্থানি প্রস কল ব্যতিরে হিশেষ পরিগত ইইবার নিরিত্ত অন্তঃকরণে নিতান্ত ব্যাকুল হইয়াছি ।

न, छ, शांशिन याशासूनिया एक न जाशासिश्रा नाष्ट्र व्यानक में ने हि लाक नियं पाड़ा में क कर्त्र (ए), यं नकन लाक गमनागमन कर्त्र का कात माथा व्यानक शुकात लाक व्याए (क्ट्र २००० वाशाना भात्रिन रे जाकी साख कि किट खाना भन्न रहेशा थे जागायान वाकित्व जाहोत्र शुक् भूत्राहि भूज्ित्र मुगातिम शानित्रा दिया, रक्तिन वियय कर्म त्र शासाये प्राणिया जकत्त, रक्हिका कित्र विवयक रहेशा जम्बात ज्ञुभनाक याहाया क्रिका जानका उहेशा जम्बात ज्ञुभनाक याहाया क्रिका क्रिका क्रिका जम्बात ज्ञुभनाक याहाया क्रिका क्रिका क्रिका जम्बात ज्ञुभनाक याहाया क्रिका F. 49

कथा क्थिंड अन्य कि तर्ड डाइन विनक्ष शिक्षम, তাँकांत मिर्गत ग्राम्बर्ग गातु आहे। अबिद्धाय गंसन क्रान्य (नारक जाकामिरान्य कर् हेश्रता जात्कतावृतं भागार्क हेश्राज्ञाश्रता नका जानकि व शिक विकास अपनि के विकास नाठजन त्राक्रा शिख्ज अ याद्यन जारा कथन नाजाविनास कर्त्रम, कथ्म नाख्यत जाए नस्ड व्यान्य देशां विश्व वाधन्य विश्व के जिल्ला के मात्र शात्रमणी रुरेदान, कानर वा किलान नामभूमि मार्स किथिए छ्वान यास्ट, डाउम्। यथन कष्विया वाक्ष इय ज्थन जाङ्गता ज्या डांश्राक जार्थािष करतंन क् ठक छिनन (नाक कारि जाई। द्वाभियागन्न क्रिडिख्लाक्ष्यंक्ट्मा शकाम कतिए विनक्ष निश्व जार्गता महाराम माद्रिवक्ठाक्द्र, जाह अन्हन्तिक अक्षन्त्रि भिक्षितिग्रक याकाग्राजकति अभकनरह जिन विष्णिक जात्वक जिक्छ यास्र, भक्ता वा वाक्निहिं कि मुद्रेक विद्या या भारक के लिए हैं

चित्रा, जाभाषांत्र शान वात्त निविद्ध लाक जायाद्यतं विषयात उँ खतं मुनिया विभाग ना हत्या तत्र अधिक जत्र मिन्दिक इस्वाभ (यद्भ छ णा, पान कि हिलान (य क उन्ह खिनन लाक कुट्टिंग) जिल्लात आरष्ठ हेहार र राष्ट्र हेन स्य जाकाता. जित्रकाल क्रिया श्रामात काणहे कालपालन क्रिंडिए जान जाभाकारक जिल्लामाकित वाब् जार्यतिहरण र जानकमा जिल्ला न सम्बद्धान वादान कि धाद यह जिल्ला जारात र उत्तान कर्य नाथाः ज्या डाहाइहिरा । किन निया वान्।म न्याका गाजाशाजकराष्ट्रिय स्थान हेराव जवत र्यन मार्थ व्याप विषया रिलाइ किल्ला क्रिया

नि, ए, एकि जन्म विस्तृत्वा कवियार जानि ए भारत कथा विना १६ १२ कठक अनिस्तृत्वा प्राप्ति विस्तृत्वा स्ताहि कविया प्राप्ति विस्तृत्वा स्ताहि कविया प्राप्ति विस्तृत्वा स्ताहि कविया प्राप्ति विस्तृत्वा स्ताहित क्षित्वा

क्षित अन्या कित्र विवासन र्गीद्धम, ठीकांत मिर्णत महिया वात् काले भविष्ट्राय गंबन क्रावन लाक जाकामिरगद्ध कर्ड हैश्रा णमुक्वावृतं सी नार्क्ष्ट्रेश्डिश्राहाता नक्ष जानामा उर्शिक विक जाक्षेत्र प्रकृताहि नाठकन त्राक्षण ना छाउ । वाहान दाशा कथन, नाजितिहास करतम, कथन नाजित छाए भरा छ श्राम्य इशाउ (वाधर्य (य उनिवान जिल्लाम मात्र शात्रमणी रहेरवन, कानर वा किलान नामभूमि मार्ज किथिए छ्यान चार्यः दात्र। यथन कष्विरा वाक्ष इय ज्यन जोशाया कष्त्राता डाँश्राक जाभाषिक करतन कठक छनिन लाक काहि जाई। त्रामिथ्यागन्न क्रिडि छ्लास्क्रिक्ट्ना श्काम क्रिए विनक्ष िश्व जाश्री महार्थि माद्रवकु जाक्द्र, जाः वनक्षाक वक्षनित्र भिकृतियुक्त याकायाककति अभकनरह विष्णिक अत्रित निकर्ष यास्र, अकृत वाला याक्ति विक्रम् किया याज्यक्ति ।

निज्ञ, जाशमकांत्र हात वातृत निष्धे लाक निज्ञा जतः विषयात उँ जत मृतिया जिल्लाक जानते वा जिल्लान त्य कठक छनिन लाक क्रिक्स जिल्लान वार्ष्ठ हेशान जाम केला वा जाशान उत्तकान व्यवहा भूरमतात कलाई कानयालन कित्रकान व्यवहा भूरमतात कलाई कानयालन कित्रकान व्यवहा भूरमतात कलाई कानयालन कित्रकान व्यवहा भागाना किञ्चानावित वात् जाशातिका व्यवहान कित्रा नाम छत्त्र नाम कि कात्र यहालि छाँ हात्र हर्ष्ठ कात्र केमा नाम कि कात्र यहालि छाँ हात्र हर्ष्ठ कात्र केमा नाम कि कात्र यहालि छाँ हात्र हर्ष्ठ कात्र केमा नाम कित्र वा छाशाव कराईस्त्र किन विया वाण्या

वित्र के जिल्ला कि विश्व का जिल्ला कि विश्व हैं जिल्ला है जिला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है

( birth भारत क्ष विष्य नियुक्त कविशा शास्त्रन जात्र ब, भ, श्रीभनि किश्लिन य करार किन यानिकार्ति राख (कान क्यां नाशाःक उत्हान ्लाफ बाफ् उाश्विशित (लाक वातुव प्याना खरमात्र वास्कि मुभाविभ जानिवा गान जानाक कः तिलाल अवः भान विष्णास नागृतं भाक क्षान का नारे याभिन यह व (शत्म उक्ता अन्य थारक, जाल त्रांकामन क्ष्ट्रीकक्ष जाङ्ग स्वार्ध नाण्यिया रक्षणानः जाशाल (न.क, भारता निक्क महान्यात्रितिक पाठाशाउकद्विण छेशिष्ट् (साकराजा निन्ति धर्मज विषय याश्वाज्य जार्य यायकास्त्र विख्यामाकप्ति उष्टां पिरणत न्दिल्बिशा दियः हैश्राहनायुकि, जाशाद कि य्यन अभिता व्यक्ति । ि गुकाल मिन निर्माष्ट्या। वि, भु, कन्म जिनीहेजामिविवाह्बज् निश्रुं न, ए. न्य याश्वावाव्य (यामार्व कर्ण श्वावह्य जाहात्र विस्तु विस्तु जानात्क कि वा किषिणा किन्या जाया क कहान जाभन मक्रा नाकाद्रन (कन। न, फे, गाभि छामाद्य अम्ड क्यां विकास ार्ड प्राप्ति ना कि नक गार्व निकार पायकता । प्रमा न्या इया, ग काश्व भविवात थार ह जे नारा उपान जामा जाराक करि जरह कार्य अस्ति अस्ति अस्ति । अस्ति । अस्ति । ारा वृद्धि । निर्माणियात् क्रिक्ट

BLOCKED INFORMATION.

200 िन भी विष्ये मियाथाक यानिया (तता (कान डिभाय कविया नय। वि. भू, बुाक्त शिखन मिरगत निर्धित अभिनि स्वान्द्र तान । या जाराज्ञा चात्र निकंद्र नारज्ञ राष्ट्रभर्ग लार न इहार है हैं। जान (बार्ड लाराशा शिंडिंड, बर्कीने। विधि पानिक यात्र मार्ग महिन विष्णा छेला छन् मिला भाषात एए शर्ग विख्ना कि विधि अभग रहेश ए बाकि माखि उस गर्धाए मण्मू ज अक प्रांतिक जाजनाई (न जाका जार गर्ना विद्याप्य जाना लेलावा नवन व्यान ववण नाम्योद्देशी मित्रा भारत मार्गित विश्वास मेर्गिया शाबियाधावितियात जिल्ला । १ (मा.मा.मा.मा.स. अर्थाकारकारकार स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

्र (कान नातुत्र किष्ट् भारतारगाम ज्याः जिल् क्रियिन वियुक्ता क्रिया (मिला) न य त्याव हिं इत विद्धां जिमानी जाउ वर वेच शिक (वक् रिलिल्सिक्स स्ट्रिशाक्न वर्ष्ट्र कर्र व्यक्षित्र । नगराम्बन हरू इडा - विल्ला अञ्जि ना दिव क्यां कि कित्या वान्ति सेव के यात्मन, किर् मान्डि भागवा काम बण्या फर्माः हर मिषिया - पूर्णात निमित्न वावाद जाराज छाए नयं। किन्द्राजा करद्रन (मरे वान् केंग्ड्राइ **मिलात उ**ङ्त्रङा विविद्या ना कतिया खालान स्थान्त्रभारत अकटा त्या व्याप्त । स्था क्रामारस्था (अई क्यास्टाकारक्षयामः स्तानक समान्त्रा कर्तन या प्राप्त कार्या कर् स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वि क्रिया विवय हैं विश्वय किया । 

BLOCKED INFORMATION.